कविता

50 51 52

अप्रैल, 2012

सम्पादक : जगन्नाथ

कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

वर्ष–13 | अंक–2, 3, 4 | अप्रैल, 2012

सम्पादक
जगन्नाथ

✸

सह सम्पादक
भगवती प्रसाद द्विवेदी

✸

प्रबन्ध
संजय कुमार

✸

चित्रसज्जा
(श्रीमती) संगीता सिन्हा

✸

सम्पादकीय सम्पर्क
प्रथम मंजिल, ए/21 साधनापुरी,
रोड नं॰– 6 डी, गर्दनीबाग, पटना–800001

✸

प्रकाशक
भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान
प्रथम मंजिल, ए/21 साधनापुरी,
रोड नं॰– 6 डी, गर्दनीबाग, पटना–800001

✸

सहयोग–राशि : 25/– रुपया
(सहयोग–राशि सम्पादक का नाँव से सम्पादकीय सम्पर्क पर देय)

सम्पादन-संचालन : अवैतनिक-अव्यावसायिक

रचना खातिर एकमात्र रचनाकार जिम्मेवार । भाव, विचार भा कवनो स्तर पर ओह से 'कविता' परिवार के सहमति कतई जरूरी नइखे । कवनो तरह का विवाद का स्थिति में न्यायालय क्षेत्र पटना होई ।

www.bhojpurisahityangan.com

एह अंक में

सम्पादक के पन्ना /2

गजल / गीत / कविता

पाण्डेय कपिल/3
तंग इनायतपुरी/4
सुभाषचन्द्र यादव/6
रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'/7
सूर्यदेव पाठक 'पराग'/8
डॉ. आसिफ रोहतासवी/10
भगवती प्रसाद द्विवेदी/12
अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'/13
डॉ. बलभद्र/14
मिथिलेश गहमरी/15
सतीश प्रसाद सिन्हा/16
गोरख मस्ताना/17
केशव पाठक 'सृजन'/18
कन्हैया पाण्डेय/19
शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'/20
शिवजी पाण्डेय 'रसराज'/22
डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित'/23
जितेन्द्र कुमार/24
डॉ. (श्रीमती) शारदा पाण्डेय/25
जगन्नाथ/32

आलेख

डॉ. आसिफ रोहतासवी/33
'पीड़ित' के कविता में लोकतात्त्विक युग–बोध
रामनिहाल गुंजन/39
अविनाशचन्द्र विद्यार्थी के गीत–चेतना

कसौटी

सूर्यदेव पाठक 'पराग'/42
एगो अनमोल काव्यकृति : अतीत अमृत हऽ

रचनाकार संदर्भ परिशिष्ट/44
'कविता' में समीक्षित पुस्तक/कवर पेज/3

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादक के पन्ना

✪ 'कविता' के बन्द करे के उद्घोषणा ढेर रचनाकार आ साहित्य-प्रेमी लोग का नीक नइखे लागल । सभकर इहे शिकायत बा कि निखालिस कविता के अउर कवनो पत्रिका भोजपुरी में नइखे; एह से, 'कविता' के बन्द कइल भोजपुरी कविता के प्रगति खातिर अहितकर होई । पछिला अंक में हमरा जे कहे के रहे, खुल के कह चुकल बानी । 'कविता के बन्द करत नीक त हमरो नइखे लागत, बाकिर अलचारी जे ना करावे । एने, कुछ रचनाकार आ साहित्य-प्रेमी लोगन से हमार विशद विचार-विमर्श भइल ह, जेकरा में मिल-जुल के कविता के एगो नया वार्षिक पत्रिका 'भोजपुरी कविता' के नाँव से निकाले के बात उभरल ह । आपुसी सलाह-सउँजा के मुताबिक प्रस्तावित पत्रिका के विवरण निम्नलिखित बा–

1. पत्रिका के नाँव 'भोजपुरी कविता' होई ।
2. पत्रिका में स्तरीय काव्य, काव्यविषयक शोध आलेख आ स्तरीय काव्य-पुस्तकन के समीक्षा प्रकाशित होई ।
3. पत्रिका हर साल जनवरी से मार्च के बीच निकली, जे पछिला साल के अंक होई । उदाहरणार्थ, सन् 2012 के अंक, 2013 के पहिलिकी तिमाही में उपलब्ध होई । एह अंक में अप्रकाशित रचनन के साथ-साथ, 2012 में अन्यान्य पत्रिकन में छपल स्तरीय काव्य-सृजन के भी साभार जगह दीहल जाई । एकरा पीछे मकसद इहे बा कि कवनो साल विशेष के समस्त स्तरीय काव्य-सृजन, एक जगे, पाठक खातिर सुलभ हो सके ।
4. पत्रिका के पृष्ठ संख्या, सामान्यतया, 80 होई । कवनो हालत में ई 64 पृष्ठ से कम के ना निकली ।
5. पत्रिका के मूल्य 40/- रुपया होई ।

जो सब कुछ ठीक-ठाक रहल, त 'भोजपुरी कविता' - 2012 के अंक मार्च, 2013 तक उपलब्ध हो जाई ।

एह अंक खातिर सुधी रचनाकार लोग से स्तरीय अप्रकाशित रचना सादर आमंत्रित बा । रचना निम्नलिखित पता पर भेजल जाय–

1. **सम्पादक - 'भोजपुरी कविता', ए-21, साधनापुरी, रोड नं.-6डी गर्दनीबाग, पटना-800001**
2. **पोस्ट बॉक्स -115, पटना-800 001**

✪ 'कविता' 13 साल निकलल, अबाध गति से निकलल । 13 साल के एह दीर्घ यात्रा में 'कविता' का, 112 गो रचनाकार लोग के सहयोग मिलल बा । एह लोग के नाम आ कवना-कवना अंक में छपल बा लोग, एह सब के विवरण अंक के अन्त में 'रचनाकार संदर्भ परिशिष्ट' में दीहल जा रहल बा । एह रचनाकार लोग का संगे-संगे 'कविता' के पाठक लोग के प्रति भी 'कविता'-परिवार आभारी बा । एह लोग के सहयोग के बिना 'कविता' के ई यात्रा सफल ना हो पाइत ।

www.bhojpurisahityangan.com

गजल

पाण्डेय कपिल

[1]

बात मन के कबो कहा न सकल
गीत मन के कबो लिखा न सकल

लाख चहलीं कि भूल जाईं अब
बात लेकिन अबो भुला न सकल

गाँठ मन में जे पड़ गइल रहुए
लाख चहलो प ऊ खोला न सकल

जाने कइसे त का से का होला
काल के चाल कुछ बुझा न सकल

बात जे मौन रहके कह दिहलीं
लाख चहलो प ऊ कहा न सकल

[2]

बहुत-कुछ कहाइल, बहुत-कुछ लिखाइल
मगर बात मन के कबो ना ओराइल

लिखाइल भले बात हिरदय के अपना
मगर ऊ लिखलका कबो ना पढ़ाइल

हमें देख के ऊ नजर फेर लिहले
पहुँचलीं जबे हम उहाँ पर धधाइल

बताईं ना कइसे ऊ मन से हटाईं
रहल रूप उनकर जे मन में समाइल

कहाँ बाटे फुर्सत कि सोचल करीं हम
इहाँ रोजी-रोटी के दँवरी नधाइल

✪

3/9, इन्द्रपुरी, पटना-800024

www.bhojpurisahityangan.com

तंग इनायतपुरी

[1]

भोर से साँझ ले बस काम-काम, मत पूछीं
जिन्दगी में बा बड़ा ताम-झाम, मत पूछीं

रउरा गइलीं त ई दुनिया उजाड़ के गइलीं
के तरे चल रहल बा काम-धाम, मत पूछीं

काल्ह टोकलस तले जतरा बिगड़ गइल दादा
आज फेर कइले बा अवते सलाम, मत पूछीं

रउरा हमरा के ई अछरंग लगाईं बाकिर
सउँसे दुनिया के बा बिगड़ल निजाम, मत पूछीं

खून के दाम लगाएब त लगा लीं साहेब
पानी-पानी भइल पानी के दाम, मत पूछीं

केकरा केकरा के कहीं, केकरा के बिसारीं हम
एके गड़ही में सभे राम-राम, मत पूछीं

का बताईं भला, एह राज-पाट में रउरा
हो गइल बानी हम चलनी के चाम, मत पूछीं

उनका घोड़ा के त लगले लगाम बा, बाकिर
कहिया लागी चचा उनका लगाम, मत पूछीं

'तंग' बाटे अगर बदशाहो के बदशाह इहाँ
चमचो बेलचा के बा इहवाँ गुलाम, मत पूछीं

www.bhojpurisahityangan.com

[2]

ई जिनगी धीरे-धीरे के तरे खुद में सिमट आइल
समुन्दर से चलल पानी समुन्दर में लवट आइल

ई ठिठुरत माघ के सूरुज रजाई में लिपट आइल
सबेरे-साँझ के दूरी बहुत हद ले बा पट आइल

कुहासा के दोशाला ओढ़ के चम्पा भइल दुलहिन
उहे सरदी के मौसम ढेर दिन पर फेर पलट आइल

नदी के रेत पर ई झुण्ड उतरल बा चिरइयन के
ऊ सतरंगी नजारा प्यार के तीरे उलट आइल

पहाड़ी गाँव से उतरल नदी बेजान बा अइसन
कि कवनो द्वारिका से हार के गोपी लवट आइल

हवा में कनकनी, बदरी के टिप-टिप बून्द बा तबहूँ
केहू के याद अस दहकल कि हियरा ले लपट आइल

गजब ई प्यार के मौसम जवन क्षण भर के मोहलत में
कई मौसम के शिकवा आ शिकायत से सलट आइल

इहे चरचा छिड़ल बा घूर तर बइठल मजूरन में
चलऽ, अब माघ बीतल धीरे-धीरे जाड़ कट आइल

बताईं तंग साहेब तोप आ तलवार का होई
मुहब्बत से गले मिलके ऊ दुश्मन से निपट आइल

✪

रजिस्ट्री रोड, कागजी मुहल्ला,
सिवान-841226 (बिहार)
मोबाइल - 9431218632

www.bhojpurisahityangan.com

गजल

सुभाष चन्द्र यादव

दर्द अबहीं उठान पर बाटे
पंछी अबहीं उड़ान पर बाटे

दिल से निकलल जबान पर बाटे
तीर अबहीं कमान पर बाटे

एकरा घटला के, ओकरा थकला के
चरचा सबका जबान पर बाटे

झूठ हमसे कबो कहाई ना
केतनो आफत परान पर बाटे

हम त सगरो गवाँ चुकल बानी
अब त रउरे इमान पर बाटे

खेत मालिक के बाप के इज्जत
लइकी जोगवत मचान पर बाटे

जेतना बिसवास हमरा गीता पर
ओतने हमरा कुरान पर बाटे

रात बीते दीं, भोर होई नूँ
सब के असरा बिहान पर बाटे

राजमहलन प नइखे पाबन्दी
पहरा टूटल मकान पर बाटे

कवनो नारा, न कवनो पार्टी पर
देश टीकल किसान पर बाटे

अब त ठहरी 'सुभाष' मंजिल पर
उम्र अइसन ढलान पर बाटे

प्राचार्य, दरोगा प्रसाद राय महाविद्यालय, सिवान-841226

www.bhojpurisahityangan.com

गजल

रागेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

[1]

हो गइल दर्द से सगाई बा
घर से मुस्कान के बिदाई बा

हाल पूछे हमार जे आइल
हाथ में ओकरा सलाई बा

रार पर वक्त बा उतर आइल
अब त रहले में चुप भलाई बा

रेत पतझार के गला विहँसल
ई जे फागुन बा, बड़ कसाई बा

गर्म मौसम के बा असर कहँवाँ
लोग तऽ ओढ़ले रजाई बा

भोर, 'पीयूष', खूब चाटत बा
आज ओसे भइल मलाई बा

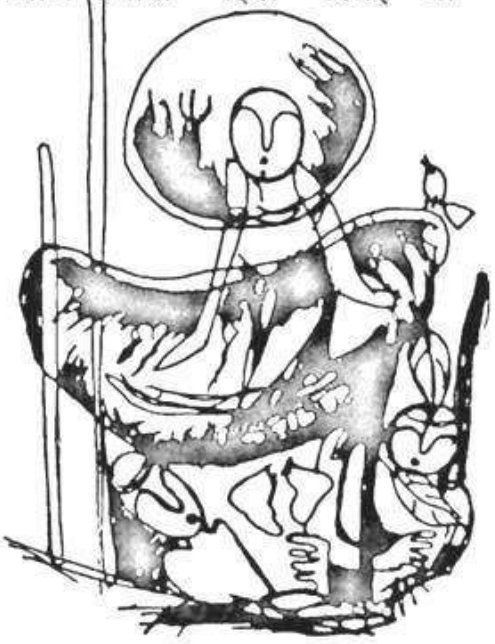

[2]

धूप में आँख ऊ सेंकते रह गइल
बस कि उनुका के ऊ देखते रह गइल

मन से मन के मिलन उनसे कब हो सकल
बात-बेबात पर ठेकते रह गइल

खून आपन ना ओकर सहारा बनल
उम्र भर लाठिए टेकते रह गइल

स्वाद झींगन के मुँह से जे लागल रहे
जाल पोखर में ऊ फेंकते रह गइल

दिल में जेकरा न संवेदना के लहर
ऊ न इन्सान भा देवते रह गइल

जे खरीदे चलल आईना वक्त के
खुद के बाजार में बेचते रह गइल

डेग एर डेग 'पीयूष' डालत गइल
काँट-कुस रास्ता रोकते रह गइल

✪

शंकर भवन, सिविल लाइन,
(बाजार के पश्चिम), बक्सर-802101

www.bhojpurisahityangan.com

कविता

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

बड़प्पन के नयकी परिभाषा

बड़प्पन
शराब खानी महँकि के
आपन परिचय बतावेला
कवनो घिनौना काम कके
सुकरम मान के ठठाके हँसेला
दू नंबर के पइसा कमाला
गरीबन के सोखेला
आ दोसरा का खून से
जोंक खानी अपना के पोसेला ।
टार्च खानी
अपना ओर ना देख के
सभकर दाग बतावेला
अपना चेहरा चमकावे खातिर
समाज के धमकावेला ।
कमजोर के पछाड़ेला
आ बरियार के पोल्हावे खातिर
पोंछ हिलावेला ।
इहे ना
गरीबन के जूता मारेला
आ अफसरन के तरवा चाटेला
खाली अपने गुनगान
ओकरा भावेला
दोसरा के गलती
प्रदर्शनी नियर देखावेला
आ आपन कुकरम
कंजूस का धन नियर छिपावेला
नैतिकता का सड़ल-गलल लाश के
अपना धन आ बल के
सोनहुला दुसाला में
सहेज के देखावेला ।
इन्सानियत के
खुला बाजार में बेंच के
सीधा-सादा लोगन के कच्चा माँस
नोच-नोच खा लेला
आ मोका मिलते
मंच पर चढ़ के
मार्क्स-लेनिल-गाँधी के
पुनीत गीत गा लेला ।

✪

www.bhojpurisahityangan.com

दोहा

आँखिन में कानून के, जे घोटालाबाज ।
उहे शान से देश के, चला रहल बा राज ।।

मन्दिर से मतलब कहाँ, मस्जिद से का काम ।
रहस चैन से रहनुमा, मारल जाय अवाम ।।

जनता गाय दुधार आ नेताजी गोपाल ।
दूहत जाले प्रेम से, वादा-भूसा डाल ।।

कबले नकली शेर बन, शासन करी सियार ।
जबले जागी शेर ना, पाई ना अधिकार ।।

उहे गुनी धर्मातमा, ज्ञानी, चतुर सुजान ।
बने कहीं से लूट के, आँख झँपत धनवान ।।

कमजोरे खातिर बनल, नियम अउर कानून ।
बाहुबली घूमे खुला, रोज बहावे खून ।।

साहस दिढ़ संकल्प से, अगर करे शुभ काम ।
मिहनत से मन ना हटे, मिले सुखद परिणाम ।।

नारी के अबला कहल, बहुत बड़ा अन्याय ।
पाँव बढ़ल हर क्षेत्र में, अब नइखे असहाय ।।

दुर्गा, लक्ष्मी, शारदा, नारी के कइ रूप ।
ताकत, धन आ ज्ञान में के इनका से भूप ।।

जब-जब संकट में घिरल, पुरुष भइल लाचार ।
नारी शक्ति स्वरूपिणी, भइली शक्ति अपार ।।

✪

181, आवास विकास कॉलोनी-1, शाहपुर,
पो.-गीतावाटिका, गोरखपुर-273006

www.bhojpurisahityangan.com

गजल

आसिफ रोहतासवी

[1]

कतना आइल आन्ही-पानी
आजो हम जस-के-तस बानी

का उधियाइत, ए बाबूजी
ना घर बा, ना छप्पर-छानी

सउँसे जंगल हमरे बाकिर
हमहीं कउआहँकनी रानी

अत पर कइसे खून न खउलो
नस में नइखे बर्फिल पानी

बरियारे खूँटा भेंटल बा
जतना चाहीं, कूदीं-फानीं

कुल सरकारी नाच-डरामा
रउओ जानीं, हमहूँ जानीं

अदिवसियन के पीर लिखाई
थाना सोटा-रइफल तानी

आजो 'आसिफ' में जीयेलें
बाबा-आजी, नाना-नानी

[2]

आँख-नजर कुल दाव प मरदे लागल बा
चेहरा पर कय-कय गो चेहरा टांगल बा

बाँची जे कुछ तवने चहुँपी हमनी तक
ऊपर ले नीचे तक सभकर बान्हल बा

खोरिन-गोइँड़े कूकुर रोवत बाड़न सऽ
अधराते समसाने सियरा जागल बा

काहे नाहीं साएरमाई खुस होखस
करिया पाठा अउर तपावन भाखल बा

रउरा आँखिन में, दिल में हम बसलीं का
बस, अतने पर भर टोला बिसमाधल बा

केकर-केकर वार बचइबे ए 'आसिफ'
लबदा-पत्थल सब तोरे पर साधल बा

www.bhojpurisahityangan.com

[3]

घुमलीं जंगल, वादी-वादी
भूखे बा सउँसे आबादी

मुँह पर ताला, पाँवे बेड़ी
धन बा, धन बा ! ई आजादी

जे अबरा, बइमान कहाला
दूध क धोवल खाकी-खादी

हक खातिर हथियार उठवलस
नाँव धराइल नक्सलबादी

गड़थइया के नाच नचावे
खूबसूरत सत्ता-सहजादी

सूते ओला ! जागत रहिहऽ
आज गजल बन गइल मुनादी

पलखत पवते छप-से काटी
'आसिफ' कइसे मूड़ नवा दी

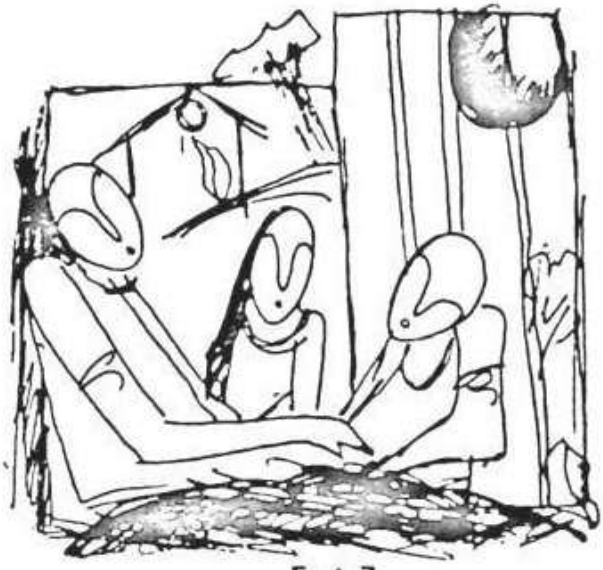

[4]

अजगुत बा मजदार सुसासन, ए सरकार
सस्ता दारू, महँगा रासन, ए सरकार

भर घर मुसरी डंड-बइठकी मारेले
अँइठे अँतरी रोज उपासन, ए सरकार

मालिक-घर के छारी फींचत बीते दिन
माँजत-धोवत बरतन-बासन, ए सरकार

कान जुड़ाइल, पेट के आग बुताइल ना
कतनो पियलीं रसगर भासन, ए सरकार

वोटे देके, 'आसिफ' गदगद बानी जा
बनल रहो परताप-सिंहासन, ए सरकार

✪

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
पटना सायंस कॉलेज, पटना-800005

www.bhojpurisahityangan.com

भगवती प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरी हमार

एकरा नस-नस से टपकेला रसवा के धार
भोजपुरी हमार, भोजपुरी तोहार ।

सोन्ह-सोन्ह गुड़ जइसन ई माटी ह
एह में रचल आ बसल जिनिगी खाँटी ह
मीठ अपनापन के त परिपाटी ह
साँच, आन, बान, शान के ई थाती ह
अस्सियो में ले आवे ई जोश के जुआर
भोजपुरी हमार, भोजपुरी तोहार ।

छूँछ भाषा ना, एह में बा भाव भरल
सुख आ दु:ख भरल, जिनिगी के घाव भरल
आस-बिसवास अउरी उछाह भरल
सबके हिरदया के बतिया अथाह भरल
ई त ऊसर मन में भरे प्रीत के फुहार
भोजपुरी हमार, भोजपुरी तोहार ।

बात दू टुक्की, साफ-साफ आवेला
एकरा लावल-लपिटावल ना भावेला
जे करे जइसन, तइसन ऊ पावेला
गीत देस आ बिदेस एह के गावेला
माई के चरन में माथ नवाईले बार-बार
भोजपुरी हमार, भोजपुरी तोहार ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में कबिरा के बानी बा
वीर बाँकुड़ा कुँवर सिंह के पानी बा
भोजपुरिया बलिदान के कहानी बा
भिखारी ठाकुर के भरल रवानी बा
लूटि लिहीं महेन्दर के पूरबी-लहार
भोजुपरी हमार, भोजपुरी तोहार ।

जागऽ भोजपुरिया गाँव, जागऽ भोजपुरियामीत
छेड़ऽ नवका तराना आ माटी के गीत
भर द फेरु से मनुजता के गमकत पिरीत
चिन्हऽ, लोगन के अलगावे दनवा-दईत
नेह-नाता पर काबिज जनि होखे बजार
मनई-मनई के जोड़े खातिर करे गोहार
भोजपुरी हमार, भोजपुरी तोहार ।

✪

204, टेलीफोन भवन, आर-ब्लॉक,
पोस्ट बॉक्स 115, पटना-800 001
मोबाइल : 09430600958

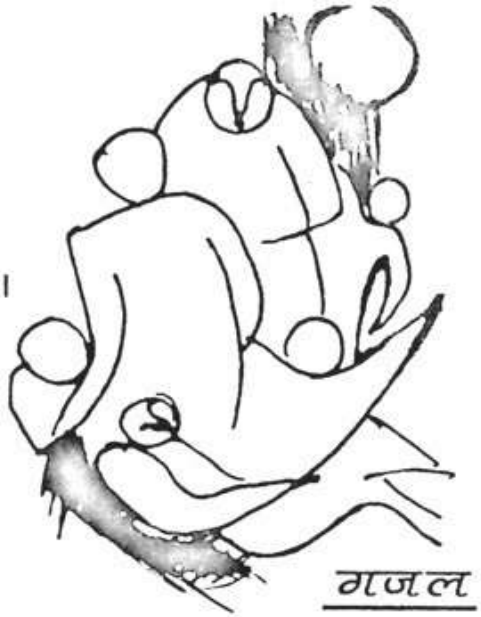

गजल

अनन्त प्रसाद 'रागभरोसे'

गाँव से मुँह जे मोड़ के जाता
सिलसिला सबसे तोड़ के जाता
भाई-चारा के आ मुहब्बत के
साँच पूछीं, ऊ छोड़ के जाता
भव्य घर हो शहर में एह खातिर
गाँव के मड़ई कोड़ के जाता
सबसे सम्बन्ध घट गइल बाकिर
धन निकहा ऊ जोड़ के जाता
अबहीं कचनार होत बिरवा बा
पुलुई ओकर मरोड़ के जाता

✪

सागर, पाली, बलिया (उ. प्र.)-277506

www.bhojpurisahityangan.com

बलभद्र

अपनइत एगो जियला अस

कबो बेटा के तरफ
कबो पतोह के तरफ
कबो बेटी, कबो दमाद के तरफ
बोलेली माई
बेटा-पतोह के तरफ जतना
कम ना तनिको बेटी-दमाद के तरफ

बाबू जहिया उतरल-उतरल
लउकेलन थाकल-थहराइल
भा कम जहिया खाएलन
उनका से हिर-फिर पूछेली माई
बाकी जब बोले के होला
त बहुते कम बोलेली उनका तरफ

उनका बोले के जगह के
नइखे कवनो कमी
ऊ रसोईघर से बोल सकेली
बोल सकेली भंडारघर से
आँगन से, दुआर से
कवनो कोना, कवनो अँतरा से
बोल सकेली

ऊ जहँवाँ से बोलस चाहे
जवना तरे
भाषा में उनका ना परेला
कवनो खास फरक
बोलेली त जरूरियो ई नइखे
कि लग्गे उनका होखबे करे केहू

ऊ बतिया लेली चुल्हा से
तावा-चउकी-बेलना से
बतिया लेली भरपेट
सूप से, चलनी से
बहुत फरिछ भाषा में
बतिया लेली झाड़ से
अनाज के बोरा आ
फाटल-पुरान झोरा से
आपन चुप्पी आ चरफरियो के
ना जाए देली बेबतिअवले

बरिस-बरिस के ई अरजन ह
उनकर आपन
उनकर बोलल-बतिआवल कबो
लड़ला अस लागेला
कबो गीत कवनो गवला अस

जेठ के दुपहरिया में
ओरियानी तर एक सुर में
बोलेला पंडुक
काम के पाला छटका के
सुस्तालें मजूर आ सुस्ताली माई
सूई-धागा के हर टोप पर
मतलब छोड़त चीजन के
नया एगो मतलब देत
अपनो के मतलब से जोड़त
हर टोप पर

www.bhojpurisahityangan.com

तीज-तेवहार के मोका प कवनो
भा असहूँ बीच क के शुक भा सोमार
घरर्र-घरर्र ताल आपन ठोकेला जाँत
घर के उचटि जाला बड़-बनुआ नीन

जाँत के उखाड़े के चलल जब बात
उखड़ि गइली माई
जइसे उखाड़त केहू उनके के होखे

गाँव में आटा चक्की के
जबकि नइखे कवनो कमी
घर, दुआर, चूल्हा-चउका
बदलि गइल बहुते
बहुते बदल गइल बात-बेवहार
तब्बो नइखे रुकल जाँत
नइखी रुकल माई
खूब बा उनका लगे बात
खूब बा दवर-दरकार
खूब बा, खूब बा खीस-पीत
खूब बा अपनइत
ऊ बोलेली अपना अपनइत के तरफ
एह अपनइत के जियला अस बाटे
उनकर बोलल-डोलल

✪

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
गिरिडीह कॉलेज, गिरिडीह-81502 (झारखंड)

ग़ज़ल

गिरिलेश गहमरी

निशान बा अगर इकाई के
तबे वजूद बा दहाई के

तोहार लोर, आज के पोंछी
जमाना उठ गइल भलाई के

सुखा रहल बा आँख के पानी
कहाँ बा लाज मुँह-मराई के

कबो मिलाके दूध में देखीं
असर पता चली खटाई के

पलंग पर लगाके आसन, आज
कथा लिखा रहल चटाई के

हुजूर, ई मशीन का जानी
कवन समय भइल खराई के

महल में तान के, जे सूतल बा
मरम का समझी ऊ हराई के

बदाम-पिस्ता, दूध के घर में
कवन बा मोल लकठो-लाई के

✪

बाबू राव मुहल्ला, गहमर, गाजीपुर-232327

www.bhojpurisahityangan.com

सतीश प्रसाद सिन्हा

सराप बिसवास के

जा रहल वा छोड़ के
बिसवास आदमी के
आदमी से दूर, अतना दूर
कि आदमी ओह के
देख ना सकसु
पहचान ना सकसु ।
देत बा सराप ऊ,
कि फूट जाव आँख
आदमी के हिया के
आन्हर बन जासु आदमी;
कि विज्ञान-ज्ञान के
लाठी पकड़ि के
चले के जोम में
गिरत रहसु, ढिमिलात रहसु
गड़हा में बिनास के;
कि तूरि देसु आदमी
सपना ललना के
पलना प
धरा के हाथ में ओकरा
खेलवना बनूक के;
कि झुलसि जाव
नीन के परिअन के पाँखि
लइकन के निर्विकार
मन के आगि में;
कि आगि लागि जाव
आदमी-आदमी का बीच
मनमोहक प्यार के बगान में;
कि भूल जाव आदमी
आदमी में उतरल
दुख-दर्द पूछल
रिश्ता-नाता के मरम बूझल
संवेदना के अरथ समुझल,
कि पाखर बनि जाव पाखर भगवान के
आ पाखरे बनि जाव
कठोर हिया बुद्धिमान के ।
डर बा, सराप बिसवास के
पसरत चलि जाई
आदमी-आदमी में
नाग के बिख लेखा
नस-नस में कटिहन आदमी
एक दोसरा के दाँत से
मरिहन लोग शांति के भूख से
रोज-रोज एक-एक कइ के
निकली लाश आदमी के

✪

कल्याण विहार, अम्बेदकर पथ,
बेली रोड, पटना-800014

www.bhojpurisahityangan.com

गोरख मस्ताना

गीत

देखीं पिरितिया पिराये ना
हियवा से नेहिया हेराये ना

अँजुरी से भरि-भरि अँजोरिया लुटाईं
जिनिगी के पल-छिन विहँसते बिताईं
जागल सपनवा सेराये ना
देखीं, पिरितिया पिराये ना

जब रूप केहू के जी में उतारीं
मन के मउनियाँ में राखीं सँभारी
सुधिया के लतरी झुराये ना
देखीं, पिरितिया पिराये ना

तुलसी के गुनीं अउर गालिब के गाईं
दूनो आपन करीं दूनो के बड़ाई
जब ले उमिरिया ओराये ना
देखीं, पिरितिया पिराये ना

रहि के महल में निरेखीं पलानी
उनको के आपन नियन ही गुदानीं
केहू के अँखिया लोराये ना
देखीं, पिरितिया पिराये ना

अपने जियलका जियल ना कहाला
दोसरा ला जीअल जे कहँवाँ ओराला
देखब, ई बतिया भोराये ना
देखीं, पिरितिया पिराये ना

गजल

झूठ बड़ा बरियार भइल
सच्चाई के हार भइल

भ्रष्टाचार के डेंगी ला
बइमानी, पतवार भइल

धन के धाही में तपके
बोली बा तलवार भइल

जेकरे के आपन कहलीं
बा ऊहे बटमार भइल

कलयुग में नाता-रिस्ता
बालू के दीवार भइल

नेहिया के बिगहा-कट्ठा
धुर से, धुरकी चार भइल

हाल इहे 'मस्ताना' के
सपना तारे-तार भइल

✪

राज इन्टर कॉलेज, बेतिया

www.bhojpurisahityangan.com

केशव पाठक 'सृजन'

गजल

पीरगाथा लिखाई न होले
जब कि गोड़े बेवाई न होले
प्यार कइ लऽ भले एकतरफा
एकतरफा मिताई न होले
साँच होई त अउरी बखानी
अपनहीं से बड़ाई न होले
परि सकेला सुआरथ क कीड़ा
नीक सैगर मिठाई न होले
एक हाथे न बाजी थपोड़ी
एक गँवँ से लड़ाई न होले
कब अन्हरिया-अँजोरिया मिलल बा
साँप-नेउर सगाई न होले
पूत हो जाय केतनो कुपूता
मातु कबहूँ कुमाई न होले
जे 'सृजन' बा खुदा के नजर में
बस तेही से बुराई न होले

दोहा

कोइल कऽ मुँह सी गइल, कउआ पढ़े कलाम
चानी बा मक्कार कऽ, नेकी बा बदनाम
बाहर से अनुराग बा, भीतर कपट अनंत
कइसे अब चीन्ही केहू, निसिचर हऽ की संत
मिलल एक बहुरूपिया, बनिके तारनहार
आपन उल्लू साधिके, छोड़ि गइल मझधार
गाड़ी बइठलि नाव पर, अउर गइलि ओह पार
जात-जात लिहले गइलि, नइया कऽ पतवार
अटल रहीं जो साँच पर, कबो न होई हार
विकट राहि तऽ बा मगर, इहे 'सृजन' सिंगार

✪

197डी, मानस विहार कॉलोनी, जंगल सालिक राम,
गोरखपुर-273014 मो.-08756671891

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

कन्हैया पाण्डेय

खटत-खटत जाँगर सेहराइल
अन्त समय जिनिगी के आइल
मनवा मेलछि-मेलछि रहि गइलें
लागलि आगि बजरिया बा
तिल-तिल सुनुगे झोपड़ पट्टी
बिहँसत देखि अटरिया बा

कान्हा पर महँगी चढ़ि आइल
चारू ओरिया राह रुन्हाइल
बा अभाग कइसन किसान के
राजा बनल भिखारिया बा
जे उपराजल मूँगा-मोती
ताकत आजु दुअरिया बा

मधुबोरल बतिया, बतिया के
अनकर हक अपने हथिया के
बेश्या पहिरे खासा मलमल
झिलमिल करत चुनरिया बा
झलके अँग-अँग कुलवन्ती के
दरकलि जाति लुगरिया बा

पीछे बाटे पोरसन खाई
आगे लउके अगम ऊँचाई
फूँकि-फूँकि के कदम बढ़इहऽ
छिलबिल भइल डगरिया बा
ताला चढ़ल जुबान बन्द ह
सालति कवन लचरिया बा

केहू का घर मिसिरी-माखन
केहू के खालिस आश्वासन
देखि व्यवस्था तरह-तरह के
कोसति रोज गुजरिया बा
के मिटिकाई करमलेख के
बुरबक मिलल सँवरिया बा

✪

म. नं.-2ए/298, आवास विकास कॉलोनी,
हरपुर, बलिया (उ. प्र.)

www.bhojpurisahityangan.com

शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'

[1]

आके बहरी देखीं इचिकी, काँहे आँखि चोरावत बानी
जनता भूखे छटपटात बा, रउरा माल उड़ावत बानी

प्रजातंत्र के लासि बेकफन, परल आज बा चौराहा पर
भारत माता के कोखी पर, काँहें लात चलावत बानी

जिनिगी के पर्याय बनल बा, लूट-अपहरण, हत्या-चोरी
फूलन के बगिया में काँहें, रउरा आगि लगावत बानी

सँउसे देश निगलि गइलीं पर, पापी पेट भरल ना राउर
दोसरो के जीए-खाए दीं, काँहें मुँह लपकावत बानी

डुबि जाला पानी में आखिर धन नानी आ बेइमानी के
लूटि देश के सोना काँहें, योरप में पहुँचावत बनी

कतनो लूटीं-पाटीं रउरा जाना एक दिन बा सब तजि के
सोंची-समझीं, झूठ-मूठ के, काँहें देह ठठावत बानी

'प्रीतम' अपना भारत माँ के, स्वर्ग बनाईं जोर लगाके
बेटा के कर्त्तव्य निबाहीं, रउरा के समुझावत बानी

✪

www.bhojpurisahityangan.com

[2]

आश्वासन के चारा खाके, भाषण के हम पीयत बानी
जिनिगी का चादर के कसहूँ, जोरि-जोरि के सीयत बानी

धन-धरती आ धरम-करम के, मछुआ जाल बिछवले बाटे
छटपटात बानी हम बाकिर, कसहूँ जिनिगी जीयत बानी

सीसा पर पाँकी फेंकल बा, चेहरा आपन लउकत नइखे
आपन दोसर लूटि रहल बा, दोसरा के हम लूटत बानी

कइसे बाँची इज्जत आपन, एही में मन अझुराइल बा
हारल-थाकल घबराहट में, झूठे पानी पीटत बानी

सूखल जाता नेह-नीर अब, मन के गगरी ठनठनात बा
फूल खेत से हम उखारि के, खलिसा काँटा बोअत बानी

तापे के बा चलि चलल अब, आगि लगाके उनका घर में
हमहूँ वइसन करि पाइब कब, अइसन मोका खोजत बानी

जवना छीपा में खा तानी, छेद करत बानी ओही में
'प्रीतम' रउरा सबसे बढ़िके, आ चढ़िके बदनीयत बानी

✪

कुमुद कुटीर, महाराजा हाता,
थाना रोड, बक्सर-802101

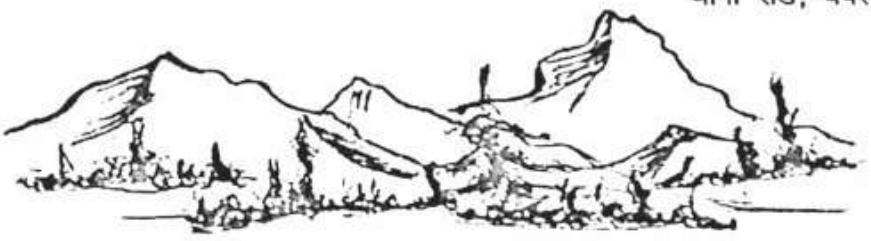

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

बाहर लड़त सीवान

झूठे मोंछि प पाव देइ-देइ, अपने बनत महान बा
सपरे भले न कुछऊ बाकिर, बे मतलब के सान बा ।

देखा-देखी में घर डूबल, लागे अब ना उबरी
मन इरिखा के बस हो बोले, सटे ना केहू कगरी,
भीतर चुहिया चूल्हि टटोले, बाहर लड़त सीवान बा ।

आपुस में बकझोंझ हो गइल, के देखी एकरा के,
बुढ़वा ओकरे बोझ हो गइल, दिहलसि सब जेकरा के,
मन में अपना सोच रहल कि, कठिन मिलल शमशान बा ।

माता जी के बँटवारा में, के ली, होखे बोली,
बाँटे वाला सहमल बाटे, परें न हमरे झोली,
कबो इहाँ कबो उहाँ जाएके, रोजे कटत चालान बा ।

सासु-ससुर घर छोड़ि के गइली, शहरे लाल पढ़ावे
उनके बेटा के सिर चढ़िके, गहना रोज गढ़ावे,
मरदें के कीनल साड़ी पर, इनका बड़ा गुमान बा ।

मेहरि देखे अर्थबेवस्था, शासन सरहजि-शाली,
साला जब से बनल मनेजर, घर हो गइलें खाली
भले उतरि जा माथ से पगरी, ओठवा पर मुसुकान बा ।

✪

ग्राम+पो.-मैरीटार,
जनपद-बलिया-277202 (उ. प्र.)

www.bhojpurisahityangan.com

तैयब हुसैन 'पीड़ित'

'पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय चमकीं निजभाषा-बिन्दी में'

सलिमपुर अहरा, पटना में 'भोजपुरी परिवार' बनल ।
जहवाँ से उन्नीस उनसठ में तिनमाही 'अँजोर' निकलल ।
बड़ा प्रेम से मेहरारू के नाम धराइल 'भोजपुरी' ।
बेटा कहइलन 'अँजोर', फेर भइल शुरू दउरा-दउरी ।
नमगर 'शिवपूजन सहाय' आ कवि 'प्रभात' के साथ मिलल ।
मददगार भइले उनकर अविनाशचन्द्र, धीरेन्द्र धवल ।
अइसे भइल शुरू अपना भाषा-विकास के दिन-चर्चा ।
एक वकीली के आमद आ घर-खर्चा, 'अँजोर'-खर्चा ।
सामग्री सब शोधपरक आ, जाए पत्र विदेश तलक ।
देशी-परदेशी खोजी के मेहनत के मिल जाए झलक ।
एही भोजपुरी संस्था से छपल भिखारी पर पुस्तक ।
परमेश्वरी लाल गुप्ता से शोहरत भइल महेश्वर तक ।
कवि-जमाव के शुरुआती होखे ओह बिरहा से अक्सर ।
जेकर कवि अँजोर-सम्पादक पाठ करीं खुद ही सस्वर ।
बीसन बरिसन पत्र निकल के लिख देलक इतिहास नया ।
भुलवावल नइखे असान ए भोजपुरी बहिनी-भइया ।
छपे लेख तब अंग्रेजी 'नेशनल हेरॉल्ड' में, हिन्दी में ।
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय चमकीं निज भाषा-बिन्दी में ।

✪

'टी. एच. ठौर', न्यू अजीमाबाद कॉलोनी,
पो.-महेन्द्रू, पटना-800006

www.bhojpurisahityangan.com

जितेन्द्र कुमार

कला-संस्कृति के विहान

एगो उहो दिन रहे
कविता-कहानी के
कि जवाहरलाल बेतवा में
मैथिलीशरण गुप्त का साथे
नहइलन, फोटो-तोटो खिंचाइल

इहो बात रहे कि जवाहरलाल
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का साथे
लँगोटिया इयारी निभवलन
रामनरेश त्रिपाठी से जेल में
रामचरित मानस के
पाठ सुनलन

एक हाली विजयलक्ष्मी पंडित
आ इंदिरा गाँधी
शिवमंगल सिंह 'सुमन' के गीत सुनिके
बहुते खुश हो गइली
ऊ लोग सुमन जी के
तीनमूर्त्ती भवन बोलावल

विजयलक्ष्मी कहली कि
जवाहर भाई के
आपन कविताई सुनाईं 'सुमन' जी
जवाहर लाल
अचंभित हो के कहले कि
कवि से कविता सुने के
इ कवनो तरीका हऽ ?

कविता सुने के बा त
इहाँ के नीकेतरी
दावत त लोग
खातिर-बात करऽ
आ तब निहोरा करऽ
कविता सुनावे खातिर

तू लोग सत्ता के प्रतीक हव
जवन सत्ता अपना
कवि-कलाकार-रचनाकार के
सम्मान ना देवे
ओकर दिन गिनले-चुनल होला

✪

मदन जी के हाता, आरा-802301
मो.-09931171611

www.bhojpurisahityangan.com

शारदा पाण्डेय के एगो लगहर कविता

भरबित्तन

लोग कहेला जे भरबित्तन
हउवन बड़ा भगसाली
उनका भइला पर बाजल
रहे फूले के थारी
उनुका माई के आँखि में
झलकल रहे खुसी के लोर
'छूटल बझिनियाँ के नाँव' कहि के
ऊ कइ दिहली गाँव में सोर
आ
देखते-देखते हल्ला हो गइल
जतना गाइ बहिला रहली स
कुल्ही गाभिन हो गइली स
भरबित्तन हो गइले गाँव के अँजोर
माई उनुकर लगा दिहली पूरा जोर
दिहली तेल के घइली में बोर
भरबित्तन आँखि मलकावसु,
हाथ-गोड़ पटकसु,
तेल लागे आँखि में त रोइबो करसु
बाकिर का करसु
जतना अवाही रही ओतने नु समाई
जतना कपास रही ओतने नु गरमाई
माई बड़ा कोसिस कइली
नाँव पुरुषोत्तम धइली
बाकिर भरबित्तन
बित्ते भरि के रहि गइलन
जतने उतजोग भइल,
ओतने ठहर गइलन
कहले गइल बा 'जेकर जतना जतन
ओकर ओतना पतन'
उनुकर माई कबो उनुका के देखसु
कबो उनुका बापू के देखसु
तुलसी के घरे भाँग भइल,
कि आम के बने धमोइ भइल
अतना चपाट सवाँग के अइसन पूत
के सझुराई भागि के सूत
देखली भागि के खेल–
एकरा से कइसे होई जीवन के मेल ?
ऊ कठुआ गइली, मन मरुआ गइल
उनुका बापू के मुँह झँवा गइल
बोली भरभरा गइल
बाकिर मर्द मर्दे होखेला
गिरेला त फेरु उठबो करेला
ऊ बूझेला 'जबले बा साँसा
तबले रही जीवन के आसा
फेड़वे भरभराई
तऽ लतर कइसे अड़ाई
कहलन 'रोवऽ जनि
घीउ के लड्डू टेढ़ो भला
केनिओ से टूटी, मिठाइए कहाला
कतनो होखो,

www.bhojpurisahityangan.com

भरवित्तन बेटी ना, बेटा हउवन
घर के अँजोर हउवन
बंस के बढ़इहन बेल
टूटला छान्ही के होइहन अलम
बेचसु बलु तेल
बाकिर लगइहन
बेटिहिनि के ठेलमठेल
तूँ कुछु चिन्ता जनि करऽ
इनका पतुकी नीअर चीकन मूड़ी में
टारच नीअर अँजोर फेंकत आँखि
देखि ली आपन राह
पाइ ली आपन ठेकाना
अउरी कुछु ना त
ई बबुआ मंगोल कहाई
आ बिकलांग के कोटा से
जिनिगी भर कमाई-खाई
सुतार परी, त हमनिओ के जिआई
आमदनी के जरिआ हो जाई
इनका के कुछु देबे के नइखे
जमावे के बा
कहे के कम, ढेर पावे के बा'
भरवित्तन के माई के लोर
पोंछाइ गइल
पपनिआइल ओठ पर
हँसी के डोला सजाइ गइल
ध्रुवतारा के देखत,
कुछ आपत राति बीतल
आ भिनुसार हो गइल
बाकिर उनुका मन में
धुकुर-धुकुर लागल रहे
काहें कि लरिकाई में भरबित्तन के,
सुकुर-सुकुर लागले रहे
उनुका के आँचर में ढाँपसु त
रोगिओ भरबित्तन कतो सरकि लेसु
ऊ टोवते रहि जासु; आ भरबित्तन
कवनो गाइ के पगही खोलसु
अउरी ओकरे टँगरी में अझुरा जासु
भँइसि के पाछा लागसु त ओकरा
गोबरे में तोपाइ जासु
इनार पर जासु त
केहू के बल्टी में समाइ जासु
बुझाइल जे भरबित्तन जवाल हो गइलन
आ माई के आगा जीए के
सवाल हो गइलन
उनुका के सेवते-जोगवत
माई के दिन बीते
आ राति आँखि में कटे
माई के आँखि के पपनियो ना सटे
बाकिर भरबित्तन ओइसहीं हँसत रहले
सभ के मन जीतत रहले
ई बुझाइल जे देहि ना
बाकिर दिमाग त पवले बाड़े
ऊ कब का करिहें
केहू के बुद्धि पावे ना ताड़े
माई सोचली कि इनिका के
पढ़ावे के चाहीं
बुद्धि नीमन काम में लगावे के चाहीं
करत-करत भरबित्तन पढ़े में तेफा
आ लड़े में नेफा के मैदान हो गइले
बाकिर विधि से ई देखल ना गइल

www.bhojpurisahityangan.com

बापू के आँखि उलटि गइल, आ
भरबित्तन जवान हो गइले
गाँव भर में सोर भइल
केहू के घइला सोगहग ना रहल
लहँगा से चुनरी ले
करेंट निअर जासु
घइला के उतजोग पर आँखि से
स्विच् नीअर ऑफ हो जासु
उनुकर माई पीटि लिहली कपार
लिलार पर पसरि गइल
चिन्ता के जाल
सोचली जे का करीं
भागि में का लिखल बा ?
कइसे लड़ीं ?
भरबित्तन आखिर बेटा हउअन
दुआर के सिंगार आ कुल के
रखउवा हउवन
बेटी ना नू हउवन कि
कतहूँ बिआह दीं
भठाइ दीं, आ जान बचाइ लीं
इनिके से जिनिगी पाहि लागी
आ बूड़त नाँव डँड़ार लागी
कइसहूँ इनका माथ पर पगरी, आ
गोड़ में सिंकरी बन्हाइ जाउ; तऽ
हाथ कुछु ना कुछ तऽ करबे करी
आँखि कब ले बन्द रही ?
ओरहन से जीउ छुटबे करी
सुगबुगी लागते जवार में
चर्चा हो गइल
देहि बित्ता भरि के बुद्धि
सवा हाथ के बा
लइका के सूरत पर ना
सीरत पर जा
अकसरुआ बा,
घर खानदान पर जा
कुदियो-फानि ली त
पइसा कमा ली
गाइ बन्हाई त चारा त कटाइए जाई
देखते-देखत तिलकहरुअन के
लागि गइल भीड़
काहें कि एजू के बेटी
घास-पास हई स
माछरि हई स
समय से उखारि दऽ
बेंवत से हिल्ला लगाइ दऽ
नातऽ होइ जाइ कपार के भार
पीड़ा के जवाल
जवार के फसाद
शांति के काल
एसे जइसे होखो, पार-घाट लगा दऽ
कवनो खूँटा से बान्हऽ,
गर के फाँस छोड़ा लऽ
कतो से कुछु लेइयो के,
बोली के बजार में
आपन नाँव लिखा लऽ
आखिर दान के संगे दक्षिणो के
नियम हऽ कि ना
चरचा होखते आ गइले कुबेर
लछिमिनिया के बाप
उनुका के देखते तिलकहरुअन के

www.bhojpurisahityangan.com

लटकि गइल
घइला निअर मुँह
आ लोटे लागल
पट्टीदारन के करेजा पर साँप
लछिमिनिया निअर चंचल नार
आ भरवित्ततन निअर पगही धार
अब जाई आँखि के नींदि
आ मन के चैन
कइसे बीती दिन-रैन
रोजे सुनाई परी तुरही के तान
भरवित्तन हो गइले उतान
पट्टीदार भइले चितान
भरवित्तन जीति लिहले
बिआह के मैदान
लछिमिनिया के बड़ा महिमा बा
माई के मन थम्हल बा
कुबेर के कूबर निअर धन
बान्ही भरवित्तन के मन
आ मेहरारू त बन्हला के हऽ
मन सम्हरला के हऽ
ओकरा के चाहीं माँगि भर सेनुर
पइसा भरल आँजुर
लिलार के टिकुली
गर के हँसुली
तन के सिंगार
आ बान्हे के अँकवार
सोचते माई के रोआँ गनगना गइल
दिमाग के कुल्ही नस झनझना गइल
धने कुल्ही ना नू होला
देहिओ के भूखि ना सँगराला

मन के आगि तऽ अँवटात रहेले
बाकिर देहि के आगि बउरा देले
गंगा के दउरा देले
आ बिस्वामित्रो के भरमा देले
भरवित्तन के देहि उनुका आँखि में
झुलुहा झूले लागल
अउरी रात-दिन हर छन
सवाले में डोले लागल
अनजानते गागर छलकि गइल !
कइसन भँवर में नाव सरकि गइल ?
माई माइए ना रहली
अपना सवाँग के दहिना हाथो रहली
कुल्ही ओर से खींचि के
मन के दबोच लिहली
ढरत लोर के अँचरा से पोंछि लिहली
भावी पर केकर बस बा ?
खाली करमे में नू आपन बस बा ?
देखनहरुओ के त बिधाता
आँखि देले बाड़न
सुने के कान आ सोचे के
दिमाग देले बाड़न
त कुल्ही करता-धरता के बोझ
का हमहीं उठाईं ?
आ अपना घर के उजारे के
कुल्हाड़ी हो जाईं ?
एह देस में का ना होला ?
एजू जिनिगी स्वयम्बर के नाँव पर
भीख के अन्न हो जाला
एक बेर के नकार,
का पाँच के अँकवार के

www.bhojpurisahityangan.com

खेलवाड़ ना भइल ?
मन जिनिगी भर मसोसो, बाकिर
बाँचे के उपाइ का भइल ?
एगो मरद के जिनिगी के सहल
त तपसिया हो जाला
जीउ के जंजाल आ
मरजादा के तमासा हो जाला
ओह बेचारी के तऽ
पाँच गो के आँच सहे के परल
स्वामी के संगे-संगे
भसुर आ देवरो के संगेरे के परल
बाप जोग्यता के पासा पर
लगवले बोली
तऽ सासु चीज-बतुस नियर
बाँट-बखरा करवली
मेहरारू ले बढ़ि के
मेहरारू के दुस्मन के कहाई
एक पीढ़ी के आगि से
दोसरा के दोसर के जराई
एही से अर्जुन के
जीत के खुसी तँवा गइल
काहें कि सुन्नर नारी देखते
धरम, बल आ सुनराई के
लार टपक गइल;
मन चकरा गइल
के जानी ई भावी के खेल ?
जहाँ बीतल जिनिगी के
ना होला मेल
तबे त अकसरुआ सवाँग पर
चैन से सूतेवाली मेहरारू के लाज
पाँच पति के अछइत दरबार
लोगन में भरल दरबार में
लँगटा करावल गइल ?
बुला एही लाज के तोपे के खातिर
द्रोपदी के नाँव
पाँच सतियन में गिनावल गइल
बाकिर आजु ले बेटी-पतोह के
सीता-सावित्री बने के
आसिरबाद तऽ दिआला
द्रोपदी-कुंती बने के
आसिरबाद ना दिआला
ई आसिरबाद गारिए कहाला ।
माई के उजबुजाइल मन
कुंती पर अँटकि गइल
जइसे आँखि में दीआ के
बाती उकसि गइल
मरद के छाँह होखो तऽ
लतर के अलम हो जाई
आ घर फल-फूलन से
अनासे भरि जाई
बाकिर एकरा खातिर होखे के परी
भीष्म आ पाण्डु नियर पुरुख
सहे के परी ताप, बनवास
आ अँगवे के परी आन्ही-बतास
ऊ ठंडा साँस लिहली
एगो डाढ़ि के छाँह में मन बेलमवली;
राम जी चहिहें त
कुछु उपाइ होखबे करी
जिन्हि राम जनम दिहले
बाहिं उनुके से धरइबे करी

www.bhojpurisahityangan.com

समुन्दर के पाट देखीं कि
इनार के पिआस देखीं
भावी के सोचि के
सोझवो के उदास देखीं
ई कवन बुद्धिमानी ह ?
घर-घर के ईहे कहानी ह
भरबित्तन कुछु ना कुछ बेंवत करिहें
अपना भागि के अपने बनइहें
हमरा त खाली डँड़ार देखावे के बा
राह त उनुके चलला से
पाहि लागे के बा
ओइसे भरबित्तन में
जीए के कूबत बा
अँकुसी निअर उपरलिओ डाढ़ि
नवावे के बेंवत बा
ऊ मन के कछुआ बनावे जानेलन
आ जेकरा के लोग कारिख कहेला
ओकरा के काजर निअर
आँखि में साजे जानेलन
लरिकईये से भरबित्तन
अउरी लइकन से अलगा रहलन
अपना बुद्धि आ फुरती से
लोगन के बीच ठाढ़ रहलन
जहाँ केहू के बुद्धि घाट ना पाई
ओजू भरबित्तन के फुरती पार लगाई
लोगन के पछिआइ के रहल, आ
पुछला पर सोझा आ गइल;
ई भरबित्तने में समाई रहल
एही से दाबलो मन इनका से
अँगुरी पकड़ाइल रहल

सभे जानत रहल कि
भरबित्तन के बुद्धि
देहि ले ढेर बड़
आ जागृत बिआ
भरबित्तन माई के कहलन
सावधान
खाली धने से ना
व्यवहारो से रहेला घर के मान
आदर-छोह-दुलार से
नइ जाला आसमान
झरेला गुमान
लछिमिनिए सम्हारी ई कमान
वंश-कुल के राखी धिआन
ऊ बिख पीइयो के अमृत दी
कइसनो कमी के करवटि दी
आ साँचो घर हँसे लागल
फूल खिले लागल
जब अँगना में पवजेब छनके
त माई के मन लागे महके
माई जानि गइल
भरबित्तन में जीए के कूबत बा
उनुका पाले अझुराहट के
सझुरावे के अनेक सूरत बा
कब भरबित्तन गाँधी टोपी,
जवाहिर जाकिट पहिर लिहलन
लोगन के ना बुझाइल;
बुझाइल तऽ तब,
जब बोलाइल पुरुषोत्तम के जय
घुमड़ि गइल धरती आकास मए !
ऊ फूल-माला में तोपा गइलन

www.bhojpurisahityangan.com

सासु-पतोह के आँखि में
लोर के हिंडोला झुला गइलन
बुझाइल फूल-माला
एने से ओने चलत बा
पूरा जवार ओकरा
सुगंध से महकत बा
ई कुल्ही
के सोचले रहे ?
केकरा मन में
ई सपना हिलोरत रहे
अपना देहि-बुद्धि के चलते
ऊ हो गइलन ग्राम प्रधान
गाँववालन के बुझा गइल
भरबित्तन हवन
हमरा समस्या के समाधान
गाँव में सड़क आ इस्कूल बनववलन
अब अस्पताल के पारी बा
लोगन में चर्चा बा कि अब उनुकर
विधायक बने के बारी बा
लछिमिनिया बिआ लकदक
सभले ढेर ओकरे आँगन बा झकाझक
घर अन्न-धन से, कोरा पूत से
हाथ चूरी से, माँग भरल बा सेनुर से
भरबित्तन कीर्तिमान बनवलन
विकलांग कोटा के पूरा लाभ पवलन
देस-विदेस के नापे वाला ऊ वामन
बाड़न अपना गाँव-जवार
के शान-मान
आ दोसरा लोगन में
अपना व्यक्तित्व के अलगा पहिचान
लछिमिनिया देखतिया
अपना बेटा में भरबित्तन के
आ भरबित्तन में अपना बेटा के
अतीत के उपहास वर्तमान में
हास बनि के खड़ा बा
आ ई वर्तमान भावी के नया
उल्लास देबे के प्रयास में बा
लोग कहता 'भरबित्तन के जय'
ऊ एगो जीअत
किंवदन्ती बनि गइलन
अपना देहि के कारण
ना मनलन हार
बुद्धि के साह बनि गइलन
लोग फेरु कहल 'भरबित्तन के जय'
काहें कि ऊ धइले रहलन
जीवन के लय ।

✪

142, बाघम्बरी गृह योजना,
भरद्वाजपुरम्, प्रयाग-211006

www.bhojpurisahityangan.com

गजल

[1]

समुन्दर के शोखी नजर आ रहल बा
बढ़त गाँव तक अब शहर आ रहल बा

शहर खुद के सेहत सुधारत त बाटे
मगर भार सब गाँव पर आ रहल बा

जनम के ह रिश्ता, ई टूटी त कइसे
अबो गाँव के तऽ लहर आ रहल बा

डहर खुदहीं मंजिल के पँजरा ले जाई
चले के तरीका अगर आ रहल बा

कहे हमरा आवो गजल भा ना आवो
सुने के सलीका मगर आ रहल बा

जगन्नाथ

[2]

का हाल होई आगे अनुमान हो गइल बा
रस्ता में हमसफर के पहिचान हो गइल बा

थाहत जे बा समुन्दर छूके लहर किनारे
पाके ऊ शह समय के, विद्वान हो गइल बा

हमरा जे मुँह से निकलल, विनती भी बन सकल ना
उनका जे मुँह से निकलल, फरमान हो गइल बा

अपनन के बीच बानी, अनजान बानी भलहीं
अतनो के तऽ समय के एहसान हो गइल बा

लोगन के बात सुनलीं, सुर-ताल सब के गुनलीं
हमरा गजल के ऊहे अरकान हो गइल बा

✪

ए/21, साधनापुरी, रोड न.-6 डी,
गर्दनीबाग, पटना-800 001

www.bhojpurisahityangan.com

आलेख

'पीड़ित' के कविता में लोकतात्त्विक युग-बोध

डॉ. इन्द्रनारायण सिंह
उर्फ आसिफ रोहतासवी

भोजपुरी आ हिन्दी के अब तक आधा दर्जन से अधिका मौलिक कृतियन के प्रणेता कथाकार, नाटककार, कवि आ सुधी समीक्षक-आलोचक डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित' के दू गो कविता-पुस्तक 2011 में एक सुरूकिए आइल बा– 'सुर में सब सुर' आ 'अनसोहातो' । पत्र-पत्रिकन में अबतक छिटफुट रूप से प्रकाशित-अप्रकाशित उनकर कवितन के एह संग्रहन में उनकर जवन कवि-रूप समग्रता में आइल बा, ऊ उनका कथाकार-नाटककार पर भारी पड़त नजर आवत बा । भलहीं ऊ गद्य जादा लिखले बाड़न, बाकिर एह कवितन के एक जवरे पढ़ला के बाद सहजे ई धारना बनत बा कि 'पीड़ित' जी मूलत: कविए बाड़न ।

इहवाँ ईहो साफ करत चलीं कि हम खुद कवनो समीक्षक-आलोचक ना हईं आ एही से, ई मत उमेद कइल जाय कि एह कविता-पुस्तकन के समीक्षा करे चलल बानी । 'सुर में सब सुर' पढ़ला के बाद एगो शोध-आलेख में उनका कविता-पक्ष पर कुछ लिखले रहीं आ अब 'अनसोहातो' में इनकर कवि के आउरो व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखे-बूझे के अवसर मिलल । तीन हिस्सन में हिगरावल (श्रद्धांजली, छन्दबद्ध आ छन्दमुक्त) संग्रह में सबसे जादा परभावित ऊ कविता करत बाड़ी स, जवनन में 'लोक' के सूत्र धइले समसामयिक युग-बोध के अभिव्यक्ति मिलल बा । 'लोक' बहुते व्यापक अर्थ-बोध-विस्तार वाला शब्द ह । तुलसीबाबा आ कबीर के लोक-बोध के तुलना में आधुनिक-काल के साहित्य में 'लोक' के अवधारना में बहुते बदलाव आइल बा । एह सन्दर्भ में लोक-कथा, लोक-गीत, लोक-राग, लोक-कला, लोक-संस्कृति, लोक-परम्परा, लोक-नाट्य, लोक-रंग ओगैरह पक्षन के सामिल कइल जा सकेला । एह सभन के भीतर जवन 'लोक-तत्त्व' बा, तैयब हुसैन के कवितन में युग-बोध के अभिव्यक्ति में बहुते मदतगार भइल बा । पीढ़ी-दर-पीढ़ियन के अरजल अनुभव, गियान, विवेक के अंगुरी धइले कवि कइसे ओकर इस्तेमाल वर्तमान सन्दर्भन में कइले बा, ई देखे-गुने जुगुत बात बा । आंचलिकता आ गँवईपन-गँवारूपन से उपजल ई 'लोक-तत्त्व' कवि के ढेरिखा कवितन में 'वर्तमान' से बहस-बतकही करत लउकत बा ।

एही तथ्यन के अँजोरा में देंखल जाय, त कवि के कवितन में 'आखिर तब ले', 'जा रहल बा रेलगाड़ी', 'जा रहल बा बैलगाड़ी', 'का बाँचल रहे', 'रमुनी चिरई बनाम हम आदमी', 'अलीबाबा चालीस चोर', 'जीयता हमरा में', 'अठगोरवा' ओगैरह मथेलावाली

www.bhojpurisahityangan.com

कविता धेयान खींचत बाड़ी स । कवि के लरिकाई के देखल गाँव अब नाहिओ बाँच के ओकरा भीतर बाँचल बा आजो । ओकरा इयाद आवत बा गाँव के गलियन में घूमत ऊ बाइसकोप वाला । गाँव-गिराँव में मनोरंजन के ऊ पारम्परिक, स्वस्थ-सात्त्विक आ सस्ता माध्यम रहे । एह बाइसकोप आ फेनुगिलास के (ग्रामोफोन) के पीछे ढकेलत आज के इलेक्ट्रॉनिक जुग तक के मनोरंजन के कारुणिक दृश्य उभरत बा 'का बाँचल रहे' कविता में । छिनाइल-भुलाइल आ लुटाइल लरिकाई, टीवी सीरियल-सिनेमा देखत असमय सेयान-जवान होत लइका-लइकी आ हाड़-माँस के संवेदनहीन रोबोट बनत नवकी पीढ़ी एह कविता में चिन्ता के विषय बनल बिया–

> 'हम देखले रहीं / नौ मन के लंगड़ी धोबिन / हबड़ा के पुल / बुलाक वाली बीबी / हुसैन के दुलदुल / जवना शीशा के छवमुँहा बक्सा में / ऊ दउड़ल रहे फेनुगिलास तक / बाकी बहुते पीछे छूट गइल / अब एतना / कि जब सात साल के पोता के / ब से बाइस्कोप समुझावे चहलीं / त ऊ हैरत से हमर मुँह तकलक / फेर प से पिक्चर / फ से फ्रीज / ब से ब्रोकर / म से मोटर / आ भ से भोंपू मारत / चल गइल टीवी में कारटून देखे !'

पहिले एगो जमाना रहे कि गाँवन के खोरी-खोरी डुगडुगी बजावत मदारी बानर-भालू लेले चलत मनइन के मनोरंजन करत चलत रहले । बदला में घरे-घरे से मुठिए-मुठी भर अतना अनाज भेंटा जात रहे कि एह लोग के पूरा परिवार के गुजर-बसर हो जात रहे । पुरान कुर्ता-मिर्जई आ साड़ियो-धोती एह लोग के स्वीकार रहे– भरपूर मिल जात रहे । समय बदलल । भौतिकता जिनिगी पर हावी होत गइल । लोग के घरवे में मनोरंजन के आधुनिक साधन-संसाधन जुट गइल । बाकिर, जे एह ममिला में असमर्थ रहे, ऊ लोग शहर के राह धइल– रोजी-रोटी के जोगाड़ में । भला अब मदारी बानर-भालू के करतब-तमासा देखावे त केकरा के ! बाकिर, ई पेट के भरसायँ कब मानेवाला रहे ! पेट के जार गाँव के मनइन का संगहीं ओकरो के परदेस जाये के मजबूर कर देलस । अब त गाँवन में भुलाइले-भटकल कवनो मदारी लउक जाला– छठे-छमासे । ई खाली बढ़त बेरोजगारिए के ममिला नइखे, बलुक परम्परागत रोजगार-धंधन के बेमउअत अंत आ विस्थापन के त्रासदी से एकर सीधा सम्बन्ध बा । अब पहिले अस फाटल-पुरान पावे के बात त छोड़ीं, ओह मदारी के खुद आपन गुदरी बचावल मुसकिल हो गइल बा–

> 'का पता, / भाग गइल भालू / फूट गइल डमरू / भा / केहू फइला के माँगेवाला / चिथड़े ले उड़ल / खुदहूँ / जा सकेला ऊ / रेलगाड़ी के छत पर लदाके / दिल्ली आ पंजाब / पीछे-पीछे / गँहेट बन्हले लइकन के अलविदा कहके / आखिर कब ले ढोअत फिरित खाली पेट / घर के नाम पर हरदम माथे चढ़ल / आपन सिरकीवाला बासा ?'

दुसरा के का दोस दियाव, चिथड़ा त नाक तक भ्रष्टाचार में डूबल 'बेवस्थे' ले उड़ल । रोजी-रोटी के फेरा में गाँवन से शहरन का ओर भागत भीड़ ठहरे के नाँव नइखे लेत । तमाम

www.bhojpurisahityangan.com

रिश्ता-नाता के डोर हाथ से छूटल चल जाता । सरकारन द्वारा मजदूरन के पलायन रोके आ घरहीं में रोजी देबेके कुल्ह वादा-करार टाँय-टाँय फिस बा । मुठीभर सुख खातिर भारी-भरकम सपनन के मोटरी लदले परदेस जाये के ई मजबूरी 'जा रहल बा रेलगाड़ी' कविता में देखल जाव–

'मुठी भर सुख, ढेर दुख / बाटे सफर में साथ एकरा
तूर के नाता न जाने / कहाँ ले जाई ई ठिकरा
तन भले एह में मगर / मन असम दिल्ली आ अगाड़ी ।'

लरिकाई में संतराज सिंह 'रागेश' के गावल एगो गीत रेडियो पर बेर-बेर सुनात रहे, जवना में एगो बिरहिन नायिका अपना परदेसी पति के भेजल चिट्ठी में क़हत बिया– **'भेजतानी बैरन (बैरंग), बुझिह तार, ए परदेसी बालम ।'** ई गीत अपना जमाना में 'लोक' में बड़ा प्रिय रहे । प्राय: हर लमहर चिट्ठी के आखिर में ईहो लिखात रहे– 'अब जादा का लिखीं, कम लिखना-जादा समुझना ।' सन्दर्भित कविता के आखिरी अन्तरा में अइसने मार्मिक अभिव्यक्ति बा–

'कल से खत सब तार कहके / डाकखाना में पड़ीहें / अउर थोड़ा लिख के / बेसी समुझला के हठ करीहें / शहर के मेला में खोजी / मन-हिरामन फिर सवारी ।'

अब त इन्टरनेट आ मोबाइल के जुग में लोग चिठिओ-चपाठी लिखे-पढ़े भुला गइल बा । तारकेश्वर मिश्र 'राही' (बरवापट्टी-भीमपुरा, बलिया) के एगो अइसने लोकगीत के आपन आवाज देले बाड़न भाई भरत शर्मा 'ब्यास' जी । एह में घरे से लड़-झगड़ के रूसल-खिसियाइल परदेस गइल आपन मरद के फिकिर में एगो मेहरारू के करेजा कुहुकत बा–

'फेंक देलें थरिया, बलमु गइलें झरिया, पहुँचलें कि ना,
उठे हिया में लहरिया, पहुँचलें कि ना !'

सवाल बा, थरिया काहे फेंकाइल ? दिन-रात जाँगर ठेठवला के बादो थरिया में जब नूनो-रोटी मोहाल होखे, त वोह कमासुत मरद के मानसिकता बूझल जा सकेला । ई किरोध केकरा पर ? खुद अपना पर, छूँछ-पाकल परोसेवाली मेहरी (जेकर कवनो दोस नइखे) पर, घिसल-पचकल पुरान थरिया पर आ कि खुद अपना किस्मत पर ? जवाब के दिही ? केकरा लगे बा ? बेरोजगारी आ अभाव के मार सहत अइसन हजारो-लाखो हिरामन असहाय मेहरी, पुरनिया माई-बाबू, दुलरुआ-लोलहा बाल-बच्चन आ खूँटा पर उपास करत माल-मवेसी के हूकत-कलपत छोड़ के गाँव-घर के माटी से हजारो किलोमीटर दूर जाये पर मजबूर बाड़े । 'पीड़ित' के कविता के आत्मा अइसने लोकगीतन से अभिसक्ति, प्राणवन्त आ संस्कारित बा, जेकरा भीतर जनजीवन के आर्थिक बदहाली के अनन्त, अछोर समुन्दर हिलकोरा मार रहल बा । बेरोजगारी, गरीबी आ अशिक्षा दूर करेके दम्भ भरेवाली सरकारन आ 'बेवस्था' द्वारा विकास अउर प्रति बेकत बढ़ल अमदनी के लमहर-लमहर कगजी डाटा के भीतर के खोखड़ साँच के के नइखे जानत !

ऊपर उद्धृत कविता-अंश के तर्ज पर एगो आउर कविता 'जा रहल बा बैलगाड़ी' में एह 'बेवस्था' के पोल के तनी आउर खुलासा भइल बा । जे पुरनकी बैलगाड़ी (रबड़

www.bhojpurisahityangan.com

के टायर वाली नवकी ना) देखले बा, ओकरा एकर कथ कुछ बेहतर समुझ में आई । रात भर के जागल गड़िवान भिनसहरा नीनिया जात रहलें, बाकिर बैल सही राहे गाड़ी लेले मुकाम का ओर बढ़त जात रहले स । कबो-कबो अइसनो हो जाय कि नीन में मातल गड़िवान के जब आँख खुले, त पाता चले कि ल, जाये के रहे उत्तर दरिहट, त गाड़ी हेलल बा दखिन तिलौथू बाजार में । एह हालत में मंजिल-मुकाम कब आ कइसन ! अइसना में त 'खतरा में बा सौगात सारी' । कविता के दूगो बन्द प्रस्तुत बा–

'चले के आदी बा दूनो बैल / चलते जा रहल बा /
नया लइका झूल के / गच्चा प गच्चा खा रहल बा /
राह देखलइलक जवन / ऊ लालटेन टँगल पिछाड़ी !

x x x

कब तलक एह चाल से / पहुँची भला अपना ठेकाना ? /
दिशा ना मालूम गाड़ीवान के / अटपटा गाना ! /
कह रहल घंटी के 'टुन' / खतरा में बा सौगात सारी !'

इहवाँ नया लइका के गच्चा खइला आ लालटेन के गाड़ी के पीछे टँगइला पर एक नजर डालल जाव । लरिकाई में बैलगाड़ी के पाछा (गड़िवान से चुप्पे) अइसहीं झूलत, गच्चा खात हमहूँ ना जाने कतना बेर गिर के गाँव के छवरा के धूर में लसराइल बानी आ चूतर में थास (चोट) खइले बानी । एही बात के अब वर्तमान राजनीति आ समाज पर लागू करके देखल जाव । शिक्षित बाकिर अनुभवहीन नवकी पीढ़ी राजनीति आ समाज में गच्चा खा रहल बिया । भला काहे ना गच्चा खाव ! वरिष्ठ पीढ़ी रूपी लालटेन से रोशनी के सहारा लेला के बाद ओकरा के पीछे टाँग दिहला पर (दरकिनार कइला पर) नवकी पीढ़ी के त गच्चा खाहीं के बा !

एही क्रम में कवि बिहार के मियाँपुर, पारस बिगहा आ नोनही-नगवा के वोह भीषण नरसंहारो के इयाद करत बा, जवन जाति आ वर्ग-संघर्ष के संगही पूंजीवादी-सामंतवादी बेवस्था से उपजल रहे । स्थितियन में आजो कवनो अन्तर नइखे आइल, बाकिर प्रिंट आ दृश्यमीडिया के कीन-खरीद के 'बेवस्था' आ सरकार अपना पक्ष में जवना तरीका से इस्तमाल करत जनताजनार्दन के हरियरी (सब्जबाग) देखा-सुँघा रहल बा, ऊ आजो सच्चाई से कोसन दूर बा–

'झुकल घर ओने आ / फइलल खेत एने रही कब ले ?
मियाँपुर, पारसबिघा, नगवा / के धरती सही कब ले ?
बेखबर सबसे मगर / चलले चलल जाता अनाड़ी !'

ऊपर के अबतक के विवेचन के सन्दर्भ में कविता के बारे में तैयब हुसैन 'पीड़ित' के विचार के जानल उनका भीतर के कवि के जानल होई । 'अनसोहातो' में भूमिका में लिखत बाड़न– 'कविता के मूले में ई बात होला कि ऊ 'सुन्दर' के सृजन करे आ जहाँ कही सुन्दरता होय, ओकरा पछ में खड़ा होय, साथ ही जहाँ सायास असुन्दर अनावल जात होय, ओकर विरोध करे । साँच पूछीं, त ईहे 'पछ' आ 'विरोध' से कवि के संसार निर्मित

www.bhojpurisahityangan.com

होले । .....कविता अपना समय के सरोकार के मार्मिक ढंग से उठावेली, सामाजिक असंगतियन में हस्तक्षेप करेली । कविता कवनो घटना के तात्कालिक प्रतिक्रिया ना ह, ऊ ओकर नि:संग आ कलात्मक सृजन ह ।'

साफ बा कि एह नि:संगता आ कलात्मकता के निबाहे में कवि के 'लोक' से बड़ा मदत मिलल बा । उनकर एगो कविता बा– 'रमुनी चिरई बनाम आम आदमी' । एकरा में एगो लोक-कथा के सहारे राजसत्ता के जोम, हरमुटाही, अक्खड़पन आ आम मनई के असहायता के संगहीं राजा के परिणति के बयान भइल बा–

'धान के खेत में / अकेलुआ जान के पकड़ाइल / रमुनी चिरइया/
राजा मान के खा गइलन फरगुद्दी के / बाकी पचल ना /
पैखाना गइलन त फुर्र से निकलके / पेड़ पर बइठ रिगावत भइल–/
राजा के लाल....देखलीं !'

बाकिर 'राजा' लोग के लाज-हाया होखे तब नू ! आम मनई रूपी रमुनी चिरई धरात रही, भुंजात-सींझत रही– खवात रही । भाई, आज के राजा त पचावे में माहिर बा, भले देश के जनताजनार्दन ओकर कुल्ह 'बाइसकोप' निहारत थपरी पीटत रहो ।

एहिजे एक बेर फिर लोकसाहित्य में लवटल जाव त पता चलता कि पचावे के ममिला में पहिले के राजा लोग त चिरई के के कहो, हरिनो पचा लेत रहल । लोक में गावल जायेवाला ऊ मसहूर लोकगीत के उल्लेख कइल इहँवाँ प्रासंगिक होई, जवना में एगो हरिनी रो-रोके अपना हिरना के जान बकसे खातिर रानी से निहोरा कर रहल बिया । बाकिर ओकर सुनवाई नइखे होत आ रानी ओह हिरना के सवदगर माँस पकाके राजा के खिआवे आ ओकरा खाल से मढ़ावल खँजड़ी से अपना राजकुमार के खेले के बात कहताड़ी ।

गीत में आगे खँजड़ी के बाजत सुन-सुन के हरिनी के कारुणिक मनोदशा के अभिव्यक्ति मिलल बा । एह गीत के प्रतीकार्थ के तार निश्चित रूप से 'पीड़ित' के ऊपर के पंक्तियन से जुड़त बा अउर राजसत्ता के निरंकुशता, स्वेच्छाचारिता आ परजा के बेबसी-लाचारी के परगट करता ।

आ, आखिर में, इराक पर लिखल दूगो कविता– 'अलीबाबा चालीस चोर' आउर 'जीयता हमरा में'– से दुसरकी के कुछ पंक्तियन के सोझा राखे के मन के लोभ नइखीं रोकल चाहत–

'हमरा भीतर / गंगा-यमुना नियर / एगो नदी बहेली /
नाँव ओकर कुछुओ हो सकेला– / नील, वोल्गा, टेम्स
भा दजला-फुरात / इनहन के किनार पर पनपल सभ्यतन
में / चाहे जवन नाँव ल– / सिंधुघाटी, मेसोपोटामिया /
भा सुमेरी अक्कादी / फइलल बा हमरा अन्दर /

x x x

भरोसा बा, / बगदाद जीयता बा हमरा में / जइसे मर-मर
के जियतार बा / मिस्त्र, सूनान, रोम, चीन / आ भारत ! /

www.bhojpurisahityangan.com

खुसी में / मार-धाड़ के बजार से बचावल / संस्कृति के
ई गुर / हम लड़कन में बाँटे लागल बानी...../'

बहुत बड़ बात ! बहुते ऊँच सोच ! आज के राजनीतिज्ञ आ अर्थशास्त्री लोग जवना वैश्वीकरण के बात कर रहल बाड़न, एक बेर तुलना करसु अपना 'वैश्वीकरण' आ 'पीड़ित' के वैश्वीकरण के । कवि के एह कविता के पढ़त अनियासे हमरा रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'गीतांजलि' के एगो कविता के ई अंश जेहन में घोरा रहल बा, जवना में विश्वमानवता के, खल-खल के सभ्यता-संस्कृतियन के मिश्रित रक्त-प्रवाह कवि के अपना काया में होत महसूस भइल रहे–

'हे मोर चित्त / पुण्य तीरथे जागो रे धीरे /
एह भरतेर महामानवेर सागर-तीरे / केह नाइ
जाने, कार आह्वाने / कोतो मानुषेर धारा /
एलो कोथा हॅते / समुद्रे होलो हारा / हेथाय
आर्य, हेथाय अनार्य / हेथाय द्रविन-चीन /
शक-हून-दल, पाठान-मोगल / एक देहे हॅलो
लीन / भेदि गिरिपथ, मरु-पर्वत / जारा एसे
छिलो सोबे / तारा मोर माझे, सबाई बिराजे /
के ह न हे, न हे दूर / आमार शोनिते रएछे ध्वनित/
तारइ विचित्र सूर !'

'लोक' के अइसन उदात्त वन्दन-अर्चन भला आउर कहवाँ भेंटाई ! 'पीड़ित' पर ई प्रभाव बंगला आ टैगोर के ना ह । ई कवि के आपन देसिला माटी, खाद-पानी आ संस्कार के कोख से उपजल सोच से आइल बा ।

कवि के दुसरा जवना कवितन में लोक-तत्त्व के माध्यम से वर्तमान युग-बोध व्यक्त भइल बा, वोह में 'खूँटा में मोर दाल पड़ल बा', 'दिनवा न कटे ना ओराय रात ननदी', 'राजावा करेला बरजोरिया हो', 'दंगा-गाड़ी', 'किसान-गाथा' (कुल्ह 'सुर में सब सुर'), 'हमर गाँव' (अनसोहातो) ओगैरह मुख्य बाड़ी स । तथाकथित आधुनिक आ नया पैटर्न के नाँव पर कविता के बुझउअल (पहेली) बनावे के एगो जवन रोग भोजपुरिओ कवियन में निमोनिया-अस जकड़ले जाता, 'पीड़ित' जी एकरा से कोसन दूर बाड़े । लोक-तत्व आ आंचलिक चेतना के सहारे सहज बोधगम्य आ मन के रमे जोग शैली-शिल्प अपना के अपना जुग के ईमानदार शब्दांकन इनका कवि के खासियत बा । अतने ना, हिन्दी-अंगरेजी के वोह तमाम समीक्षक, आलोचकन के आँख के पट्टिओ हटावे में इनकर कविता सक्षम बाड़ी स, जिनका भरम बा कि भोजपुरी में आधुनिक-बोध के कविता नइखी स लिखात ।

✪

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पटना साइंस कॉलेज,
पटना विश्वविद्यालय, पटना 800005

www.bhojpurisahityangan.com

आलेख

अविनाशचन्द्र विद्यार्थी के गीत-चेतना

रामनिहाल गुंजन

भोजपुर जिला के शाहपुर गाँव में अस्सी बरिस पहिले जनमल भोजपुरी के एगो कद्दावर कवि, गीतकार अविनाशचन्द्र विद्यार्थी के नाँव भोजपुरी जगत खातिर जानल-सुनल आ सुपरिचित बा, एकरा में कवनो शक के गुंजाइश नइखे । उनकर भोजपुरी के साहित्य-साधना काफी लमहर बा । भोजपुरी में लिखल उनकर एक दर्जन से जादा किताबन के देखत ई कहल जादा मुनासिब होई कि भोजपुरी साहित्य के भंडार भरे में विद्यार्थी जी के महत्वपूर्ण भूमिका रहल बा । ओइसे त, विद्यार्थी जी कई गो प्रबंध-काव्य भी रचले बाड़े, जवना में उनकर 'कौशिकायन' (1973) आ 'सेवकायन' (1984) जइसन काव्यन के चरचा खास तौर पर कइल जाला । ई दूनो महाकाव्यन के आधार प विद्यार्थी जी भोजपुरी के सेसर महाकवि भी मानल जाले । एह दूनों पुस्तकन के रचना का पाछे विद्यार्थी जी के ई उद्देश्य जरूरे रहल होई कि भोजपुरी में महाकाव्य के रचना से ओकर बड़ अभाव के पूर्ति हो सकी । तबो, प्रबंध काव्य के परंपरा जवन हिन्दी में बा, ओकर अभी कवनो सानी नइखे । भोजपुरी में महाकाव्य आ प्रबंध-काव्य के परंपरा लगभग समाप्ति प बा । एइसे मानल जा सकेला कि ले-देके भोजपुरी में लिखल विद्यार्थी जी के ई दूनो प्रबंध काव्यन के महत्व अभी ले कम नइखे भइल, बाकिर एकर चरचा जब-तब होते रहेला ।

विद्यार्थी जी के लिखल गीत, कविता, गजल अबले काफी संख्या में पत्र-पत्रिकन में छपल बा । साँच पूछल जाय, त विद्यार्थी जी मूलत: गीतकार हईं । उनुका के गुनगुनात सुनि के ई सहज अनुमान लगावल जा सकेला कि विद्यार्थी जी के रगे-रग में गीत-चेतना भरल बा । उनका पनरह गो किताबन में संकलित रचनन के देखत ई ना कहल जा सके कि विद्यार्थी मूलत: गीतकार हवे, काहेंसे कि उनकर कलम लगभग हर विधा मे यानी कविता, गीत, कहानी, उपन्यास, निबंध, आत्मकथा आदि सभ में समान अधिकार के साथ चलल बा । बाकिर, उनका लोकप्रियता के आधार गीत रहल बा जइसन हम समुझत बानी । एही से उनका गीतन के लेके बातचीत कइल मुनासिब बुझाता । ओइसे त, विद्यार्थी जी के गीत के दूगो संग्रह प्रकाशित बा– 'सुदिन' आ 'गाँव बारहो मास में' । चूँकि हम तत्काल उनकर गीत-संग्रह 'सुदिन' पर बातचीत के केन्द्रित कइल चाहब, एहसे कि हमरो ई विद्यार्थी जी के गीतन के प्रिय पुस्तक लागेला । विद्यार्थी जी अपना किताबन के साथ हमरा के 'सुदिन' के प्रति 7अप्रिल 1994 में भेंट कइले रहीं,जेकरा प लिखे के सोचत-सोचत

www.bhojpurisahityangan.com

काफी समय गुजर गइल, बाकिर हमरा उत्साह में अबो ले कवनो कमी नइखे आइल । एहसे हमरा खातिर ई गीत-संग्रह आजो नया के आस्वाद दे रहल बा ।

'सुदिन' के प्रकाशन 1974 में भइल रहे आ ई सेसर गीतन के संग्रह भइला का वोजह से भोजपुरी अकादमी से पुरस्कृतो भइल रहे । एह संग्रह में संकलित गीतन के रचना विद्यार्थी जी 1959 के आस-पास शुरू कइले रहीं । ओह समय पटना में 'भोजपुरी परिवार' के स्थापना हो चुकल रहे । ओकरा में सुनावे खातिर एह गीतन के रचना करत विद्यार्थी जी के लागल कि 'ऊ बिहान जेकर अगवानी जुग-जुग से होत आइल हा । राति का पाछा दिन के अवाई प्राकृतिक नियम ह । ई झुठावल ना जा सके । व्यक्ति आ समाज खातिर अलगा नियम ना होखे के चाहीं । आगे अवनिहार नयका भोर का ओर टकटकी बन्हले कहिए से ठाढ़ हमरा उमेदि के अतिवार के अलग मिलल बा । अँजोर का आभास से निभरम बनलीं । अब चाहतानी अपना सहज अगरहट के अलग ना राखल, सभ के साझ बनावल । 'मुरुगा', 'चुचुहिया' आ 'सुगना' का संगे-संगे हम त 'लछिमी जी के बाहन उरुओ' के नवका भिनुसार का चह-चह में जुटि जाये खातिर गोहरवले बानीं, पोल्हवले बानी, धिरवले बानी । अन्योक्तिनि का ओर अधिका इशारा कइल अँखिगर पाठक-श्रोता के अँगुरी धरावे के नादानी कहाई । एह विषय पर कतने लोग कहले होखी आ कही । हमरा 'ही'-'हूँ' ना भावे । हम 'हम' हईं, ई हमरा अस अगताह-जगनिहार जानी मानी । बात केहू के ई रूखर-आखर बतकही बे-रस के बुझाई ।' विद्यार्थी जी के एह बातन में दम बा आ एकर तारीफो कइल जा सकेला, काहें से कि ऊ जवन उमेद आ विश्वास के साथ एह संग्रह के गीतन के माध्यम से जन-जन में अलख जगावे के कोसिस कइले बाड़े, ओकर जरूरत आजो बा । एह बात से साफ बुझाता कि उनका गीत-रचना के उद्देशो नीमन आ जुग के अनुकूलो बा । एही मानी में एह गीतन के विद्यार्थी जी प्रगतिशील मनले बाड़े । उनकर 'सुदिन' के गीतन के समर्पण भी देखे लायक बा– **'जुग-जुग से सूतल जग में..../आइल जे अलख जमावत/करनिनियाँ का बेरा में/जगरम के सुर सुनुनावत/निकलल कारिख का घर से/जे कंचन काया ले के/ओही निभरम चरनन पर/बानी ई सुदिन चढ़ावत ।'**

एह संग्रह में विद्यार्थी जी के एकावन गो गीत संकलित बाड़े स । एह गीतन के माध्यम से विद्यार्थी जी जवन सनेस देबे के चाहताड़े, ऊ मानवीय आस्था के अनुकूल बा । कुछ बानगी देखल जाय– **1. जागत रहिहे, जनि सपनइहे / आगम तें जगरम के पइहे । 2. ठाढ़ सुदिन के भोर गुलाबी / पूरुब में मुसुकाइ रहल, 3. भाई इहो दिन आई, अन्हरिया राति पराई / लोही अकासे छाई, किरिनि धरती पर धाई, 4. गूँजी सुर जगरम के, नीनि परइबे करी हो । 5. बनऽ जनि नयना अधीर, सुदिनवाँ आ के रही ।**

एह गीतन के पंक्तियन से पता चल जाता कि विद्यार्थी जी जीवन में निराशा

www.bhojpurisahityangan.com

और अंधकार के कवनो जगह देल नइखन चाहत, कारन कि एकरा वोजह से जीवन दूभर हो जाला । हिन्दी में जवन जागरण गीत लिखाइल बाड़े स, ओह में भी जीवन में आशा, उल्लास आ उत्साह जगावे का ओर इशारा कइल गइल बा । चाहे जयशंकर प्रसाद के 'बीती विभावरी जाग री' होखे आ निराला के गीत 'जागो फिर एक बार' सभ में निराशा के त्यागे के, जागे के सनेस देल बा । चूँकि भोजपुरी में जागरण गीत कम लिखाइल बा, एह से विद्यार्थी जी के एह गीतन के महत्व बढ़ गइल बा । एह संग्रह में संकलित तमाम गीतन में भोर, सुबह, उजास आदि के चरचा जादा भइल बा, एहिसे कबो-कबो एकरसता के बोध भइल भी स्वाभाविके बा, बाकिर जवना मकसद से एह गीतन के रचना भइल बा, ओकर ध्यान राखत एह गीतन के माध्यम से जवन कुछ नया बिंब, प्रतीक आ कलात्मक अभिव्यक्ति भइल बा आ ओह दिसाईं कइल गइल रचनात्मक प्रयत्नो के रेखांकितो कइल जरूरी बा । एह लिहाज से उदाहरणस्वरूप कुछ पंक्तियन के देखल जा सकेला– **1. करिया बादर फाटी अबकी बा बेयारि में जोर / धार हटी कूहा के, झलकी लाल किरिनि के कोर । 2. माटी बनी सोना पारस पसेना के, / मोती झरी जिनिगी में झकझोर होखे दऽ । 3. भूँइ अगराई, मुसुकाई आसमानवाँ / नाचि उठी चकई-चकोर । 4. जिनिगिया! चमकी तोरो लिलार । 5. ललकी किरिनि टहकार हो, / पेन्हाई तब धूरि के पियरिया ।**

ऊपर के गीत-पंक्तियन के अवलोकन से ई बात साफ हो जात बा कि गीतकार व्यापक जन-समुदाय के हित में सोचत ओकरा खुशहाली खातिर कूहा के हटला पर लाल किरिनि के निकसे के संभावना व्यक्त कर रहल बा, जवना के बादे जिनिगी के लिलार चमकी आ ओकरा में मोती झरे लागी । गीतकार के एह बात में भी जबरदस्त यकीन नजर आवता कि श्रमजीवी-वर्ग के पसेना से देश के माटी सोना बनी आ धरती आ आसमानो अगराई आ नाचे लागी । एह तरे के माहौल के सृष्टि करत गीतकार ई कहल चाहता कि समाज में जवन आर्थिक, सामाजिक आ राजनीतिक गैर बराबरी बा, ओकर अन्त भइला के बादे आदमी आदमी के बीच के दूरी खतम हो सकेला ।

एह तरे देखल जाय त अविनाशचन्द्र विद्यार्थी के समग्र लेखन के बीच उनकर प्रगतिशील गीतन के एह संग्रह के महत्व बढ़ जाता आ एह दिसाईं उनका साहित्य-साधना के मूल्यांकन के जरूरतो महसूस हो रहल बा । भोजपुरी के खास कके नयकी पीढ़ी के साहित्यकार लोगन के भी विद्यार्थी जी से एह बात के सीख लेवे के चाहीं कि जन-जीवन में आशा आ आस्था के संचार करे खातिर लगातार प्रगतिशील गीत, गजल आ कविता लिखल जरूरी बा ।

✪

नयाशीतल टोला, आरा-802301 (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

एगो अनमोल काव्यकृति : अतीत अमृत हऽ

सूर्यदेव पाठक 'पराग'

अतीत के सागर से अमरित भरल गागर निकाले के पुरहर प्रयास में लागल जानल-मानल कवयित्री डॉ. शारदा पाण्डेय के काव्यकृति 'अतीत अमृत हऽ' में छन्दोबद्ध आ छन्दमुक्त तिरसठगो कविता संगृहीत बाड़ी स ।

एह कवितन में भावन के विविधता, विचारन के प्रौढ़ता आ अनुभव के परिपक्वता देखते बनत बा । अतीत में जवन कुछ नीक बा, जोगावे जोग बा आ अगिला पीढ़ी के विरासत के रूप में सँभारे लायक बा, ओकर मजिगर विवेचन एह कवितन में भइल बा, जवना से अपना पुरनियाँ लोगन के आचार-विचार, भासा-संस्कृति भारत से लेके सात समुन्दर पार ले आजो अपना पहचान के धजा फहरा रहलि बा । वर्तमान ऊ पौधा ह, जवन अतीत से ऊर्जा लेके आपन जड़ मजबूत करेला आ भविष्य खातिर फलदार आ छायादार फेंड़ बने के तैयार होखेला ताकि आवेवाली पीढ़ी जीये खातिर ताकत आ मानसिक ताप से सुकून के छाया पा सके ।

एह कविता-संग्रह में विषयन के विविधता देख के कवयित्री के बहुआयामी चिन्तन के अंदाजा सहजे में लगावल जा सकत बा । कवितन में ईश्वर के प्रति अनुराग, प्रकृति-प्रेम, भारतीय संस्कृति से लगाव, मातृभाषा भोजपुरी के बढ़ंती पर जोर आ ओके संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल ना भइला के चिन्ता, गाँवन में आपसी भाईचारा, पर्व-त्यौहार, होली-चैती गायन, रीति-रिवाज आदि में आइल कमी, जनता के बेबसी, जनप्रतिनिधियन में उपेक्षा भाव आ स्वार्थपरकता, देह के नश्वरता आ संसार के असारता जइसन तमाम विषयन पर शारदा जी का अनुभव के छाया लउकत बा ।

छन्दोबद्ध रचनन में भाव का साथे लयात्मकता आ गेयता से रोचकता त बढ़ले बा, बाकिर, मुक्तछन्दी कवितनों में भासा के प्रवाह अइसन बा कि कवयित्री का विचार के साथे पाठको ओमें बहे लागत बा । जब रचनाकार का मन के भाव रचना के माध्यम से पाठक का हृदय में उतर के ओकरा में ताजगी, कसमसाहट आ बदलाव के वातास बन के सोचे के विवस कर देला, तबे ओकर सार्थकता मानल जाला । शारदा जी के कुल्ही कवितन में पाठक के बान्ह के ओकरा भावलोक तक पहुँचावे के अकूत ताकत बा ।

'अतीत अमृत हऽ' के आरम्भ भक्तिपरक छन्दोबद्ध रचनन से भइल बा । भारतीय परम्परा के अनुसार कवनो मांगलिक काम के आरम्भ गणपति बन्दना से होला, ताकि कवनो तरह के विघिन-बाधा ना आवे । ओही परम्परा के पालन करत संग्रह के सुरुआत गणपति के 'बन्दना' से भइल बा । एह में कवयित्री गजानन गणेश से शुभ काम के निर्विवाद पूरा करे के बिनती कइले बाड़ी । 'चरनिया में अपना' गीत में कवयित्री राम के प्रति समर्पण-भाव आ राम से करुणा-कृपा के याचना बहुत मार्मिक ढंग से कइले बाड़ी त 'राम के निहारीं'

www.bhojpurisahityangan.com

कविता में राम के प्रति समर्पण के भावो बहुत भावुक मन से प्रगट कइले बाड़ी । शारदा जी के प्रकृतिपरक कवितन में प्रकृति के मोहक चित्र देखते बनत बा । 'भोर सोहावन लागेला' गीत के एह पाँतियन के भाव-सौन्दर्य देखे जोग बा– **पुरइन के कोरा में सूतल कमल सुगबुगा गइल / गँवें-गँवें पलक उघारे, भँवर गुनगुना गइल ।**
राई अँइछे लाल, अँजोरिया, भोर सोहावन लागेला । (पृ. 15)

एगो दोसर गीत 'फेरू पिहिके कोइलिया' में वसंत के वासंती छटा एह पाँतियन में देखे के मिलत बा– **फूले लागल सरसो आ झूमेले तीसी / हँसे लागल रहि-रहि के कुन्द के बतीसी / गुनगुनात भँवरा के झुण्ड आइल । बुझाता, बसन्त आइल ।** (पृ. 34)

वसंत के मनोहारी मादक वातावरन संयोगी खातिर जहाँ सुख के साधक होला, ओही जा वियोगी खातिर पीड़ादायी बन जाला । कुछ अइसने भाव के अभिव्यक्ति 'लागि गइल अगिया फगुनवा में' में के एह पाँतियन में भइल बा– **मोजरल बा आम आ महकल महुअवा / पिहिकेले कोइल झुलावे पवनवा / भइल रतिजागा अँजोरवा में, / कइसे रहीं, ना रहे मन बसवा में ।** (पृ. 23)

संग्रह के कवितन में भक्ति, प्रकृति आ सिंगार के अलावा समकालीन स्थितियनो के चित्र देखे के मिलत बा । 'का हो गइल बा ?' कविता में नेता लोग पर से उठ रहल विश्वास के झलक लउकत बा त 'देश हवे रोटी' कविता में नेतन के स्वार्थपरस्ती उजागर हो जाति बा । 'हमरा लाज लागत बा' कविता में भारतीय संस्कृति पर हो रहल हमलन पर चिन्ता परगट भइल बा । 'अपने घर में' कविता का माध्यम से भारतीय नेतन में इच्छाशक्ति के अभाव का चलते पाकिस्तानी आतंकियन से समझौता आ पाक के बर्बर व्यवहार के चित्रण से साफ मालूम पड़त बा कि कवयित्री के नजर देश के राजनीतियो पर गइल बा । बाकिर उनका अपना संस्कृति, अपना गाँव आ अपना मातृभाषा भोजपुरी के प्रति ज्यादा चिन्ता उनका कवितन में देखल जा सकत बा । एकरा अलावा संसार के असारता, चरैवेति के सन्देश अपने घर में परायापन के एहसास आदि बहुत कुछ संग्रह में पढ़े जोग बा ।

शारदा जी के चिन्तनपरक विचार आ खोजी नजर के सोझा जवन कुछ आइल बा, ओकर बहुत सुन्दर अभिव्यक्ति 'अतीत अमृत हऽ' में पढ़े के मिलत बा ।

छन्दोबद्ध रचनन में गेयता आ छन्दमुक्त कवितन में प्रवाह सब जगह देखे के मिलत बा । बउराह, गँवे-गँवें, उघटा पँइच, बरिजल, टोअल जइसन खाँटी भोजपुरी शब्दन के प्रयोग से कवितन में सुघरई आइल बा । छन्दोबद्ध रचनन में एकाध जगह मात्रा में 'घटल-बढ़ल' तनी खटकेवाला बा, बाकिर भाव के प्रौढ़ता, चिन्तन के गहिराई आ विषयन के विविधता से भरल-पूरल एह कविता-संग्रह खातिर बहिन शारदाजी बहुत-बहुत बधाई के हकदार बानीं ।

समीक्ष्य पुस्तक : अतीत अमृत हऽ (कविता संग्रह), **कवयित्री :** डॉ. (श्रीमती) शारदा पाण्डेय **प्रकाशक :** तख्तोताज प्रकाशन, इलाहाबाद, **पृष्ठ :** 80, **संस्करण :** प्रथम, 2011, **मूल्य :** 120/-

✪

181, आवास विकास कॉलोनी-1, शाहपुर,
पो.-गीतावाटिका, गोरखपुर-273006 (उ. प्र.)

www.bhojpurisahityangan.com

रचनाकार सन्दर्भ परिशिष्ट

रचनाकार के नाम	अंक जवना में रचना छपल बा
अंकुश्री	23
अक्षय कुमार पाण्डेय	10,12,14,16,17,20
अनन्त देव पाण्डेय 'अनन्त'	10
अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'	5,9,10,15,17,18,22,25,35,37, 43,48,49
अनिरुद्ध	12
अनिल ओझा 'नीरद'	18
अनीश श्रीवास्तव	16
अपराजिता सिन्हा	15
अरुण शीतांश	11,16,22
अवधेश कुमार सिंह	28
अश्विनी कुमार 'आँसू'	32
अशोक द्विवेदी	1,2,5,7,8,9,10,17,18
आदित्यनारायण	6,8,14
आनंद संधिदूत	2,9,10
आसिफ रोहतासवी	31,32,34,35,36,38,39,40,41,42, 43,44,46,47,48,49,52
ए. कुमार 'आँसू'	7,12,15,17,18,24,25,28,30,32, 33,34,36,41
कन्हैया पाण्डेय	7,18,19,21,25,26,29,35,36,40,41,52
कपिलमुनि 'पंकज'	20
कमला प्रसाद	3
कुमार अरुण	6,8,12
कुमार विरल	10

www.bhojpurisahityangan.com

कृष्ण कुमार	22
कृष्णानन्द कृष्ण	10,11,20,21
केशव पाठक 'सृजन'	48,52
कैलाश गौतम	2,4
गंगा प्रसाद अरुण	9,38,39,40,41,42,43,44,49
गहबर गोवर्द्धन	14,15,21
गोरख मस्ताना	27,30,33,52
चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'बशर'	15
जगन्नाथ	3,10,15,16,17,20,21,25,32,38,42, 45,46,47,52
जनार्दन राय	25,28
जयकान्त सिंह	12
जवाहर लाल 'बेकस'	1
जितेन्द्र कुमार	4,5,7,13,14,15,21,22,23,25,26,28, 31,43,52
जीतेन्द्र वर्मा	13
जौहर शफियाबादी	12,13,16,20
तंग इनायतपुरी	4,6,8,10,12,26,27,28,29,33,34,48, 49,52
तैयब हुसैन 'पीड़ित'	3,7,9,10,14,18,20,22,23,24,25,27, 28,29,30,31,34,35,36,37,38,39,40, 41,42,44,45,46,47,48,49,52
त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'	18,21
दक्ष निरंजन शम्भु	30
दयाशंकर तिवारी	9,10
दिनेश	17
दिनेश प्रसाद शर्मा	11
नगेन्द्र भट्ट	18
नागेन्द्र प्रसाद सिंह	10

www.bhojpurisahityangan.com

नीलिमा सिन्हा	5
पाण्डेय कपिल	1,3,5,10,12,15,16,19,20,21,22,23, 24,25,26,27,28,29,30,32,33,34,35, 37,38,39,43,45,46,47,48,49,52
पाण्डेय सुरेन्द्र	10,11,13
पिन्टू श्रीवास्तव	38
पी. चन्द्रविनोद	2,3,6,8,10,11,13,15,17,39
प्रकाश उदय	7
बंशनारायण मनज	18
बरमेश्वर सिंह	1,2,6,8,10,40
बलभद्र	3,7,9,11,4,16,18,21,23,24,26, 27,31,40,43,52
(प्रो.) ब्रजकिशोर	2
ब्रजभूषण मिश्र	10
बृजमोहन प्रसाद 'अनारी'	41,49
भगवती प्रसाद द्विवेदी	1,4,6,7,8,9,10,12,13,14,15,16, 17,18,19,20,21,22,23,24,25,26,27, 28,29,30,31,32,33,34,35,36,37, 38,39,40,41,42,44,45,46,48,49,52
भालचन्द त्रिपाठी	20
मनोकामना सिंह 'अजय'	49
मनोज भावुक	2,5,7,8,10,11,13,15,17,19,20,22, 23,28,45, 46,47
मलयार्जुन	12
महेन्द्र सिंह प्रभाकर	29
मिथिलेश गहमरी	3,4,6,8,10,11,14,15,17,18,19,20, 21,22,23,26,27,28,29,30,33,34,35, 37,38,40,41,43,44,45,46,47,48,49,52

www.bhojpurisahityangan.com

मुफलिस	7,9,11
योगानन्द हीरा	20
रघुनाथ प्रसाद 'विकल'	10
रमाकान्त पाण्डेय	31
रमाकान्त मुकुल	17,27,29,31,32
राकेश प्रवीर	8
राकेश रंजन रणधीर	6
राजीव रंजन गिरि	9,11,13
राजेन्द्र भारती	28
राधिका रंजन सुशील	8,11,39
रामनिहाल गुंजन	2,3,5,12,13,19,20,24,27,28,30,32, 33,35,36,37,52
रामप्रताप तिवारी 'प्रताप'	18
रामरक्षा मिश्र विमल	33,34,36,37,39,40,41,46,48
रामायण सिंह	19,22,26,27
रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'	1,5,7,9,10,11,13,15,17,18,19, 20,21,29,30,31,32,33,35,36,37, 39,40,41,42,44,45,46,47,48,49,52
रिपुंजय निशान्त	1,7,9,10,30,31
रेयाज मोहीउद्दीनपुरी	33
लक्ष्मीकान्त सिन्हा	16,23
ललन प्रसाद पाण्डेय	7,9,18
विजय प्रकाश	34,38,39
विजय मिश्र	31
विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी	1
विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव	16,18,23
व्रतराज दूबे 'विकल'	28,30,36,45
शत्रुघ्न पाण्डेय	36
शम्भुनाथ उपाध्याय	10,18,19,25,29,35

www.bhojpurisahityangan.com

शम्भुशरण	5,6,10,13
शारदानन्द प्रसाद	7,10,17
शारदा पाण्डेय	6,12,13,15,17,18,19,23,24, 25,27,30,32,34,36,37,44,52
शिवकुमार पराग	18,19
शिवजी पाण्डेय 'रसराजं'	12,18,21,25,29,35,36,37,47
शिवदयाल	15,21
शिवपूजन लाल विद्यार्थी	6,8,10,12,14,16,17,18,20,21,22, 23,24,25,26,27,28,29,30,31,32, 33,37,40,43
शिव बहादुर पाण्डेय 'प्रीतम'	52
श्रीराम सिंह 'उदय'	4,7,10
संगीता सिन्हा	5
सतीश प्रसाद सिन्हा	6,9,10,12,16,18,19,20,21,23,24,25, 26,28,29,30,31,32,33,34,35,36,37, 38,39,40,41,42,44,45,46,48,49,52
सत्यनारायण	2,4,11,20
सविता सौरभ	10
साकेत रंजन 'प्रवीर'	3,5
सुधीर सुमन	14
सुभाषचन्द्र यादव	29,30,33,49,52
सुरेश कांटक	5,14,16,17,20,26,28,45,46,47
सुहैल अहमद हाशमी	30,36,40,41
सूर्यदेव पाठक 'पराग'	5,6,8,10,11,13,16,35,36,37,38, 39,40,45,47,48,49,52
हरिकिशोर पाण्डेय	1,9,10
हरीन्द्र हिमकर	11,16,19,21,22
हीरालाल 'हीरा'	10,12,18,25,29,39

✪

www.bhojpurisahityangan.com

'कविता' में समीक्षित पुस्तक

क्रम	पुस्तक	लेखक/सम्पादक	समीक्षक	अंक
1.	माई के बोली में	गोपाल प्रसाद	भगवती प्रसाद द्विवेदी	12
2.	चलल सुरुज छितिज कऽ ओर	बद्री नारायण तिवारी 'शांडिल्य'	भगवती प्रसाद द्विवेदी	13
3.	काहें रउआँ बानी मनबेधिल	शिव कुमार पराग	भगवती प्रसाद द्विवेदी	19
4.	समय के राग	जगन्नाथ/भगवती प्रसाद द्विवेदी	रामनिहाल गुंजन	20
5.	समय के राग	जगन्नाथ/भगवती प्रसाद द्विवेदी	शिवपूजन लाल विद्यार्थी	20
6.	तस्वीर जिन्दगी के	मनोज 'भावुक'	भगवती प्रसाद द्विवेदी	21
7.	जीभ बेचारी का कही	पाण्डेय कपिल	जितेन्द्र कुमार	23
8.	आँचर के टुकड़ा	रमाकान्त मुकुल	भगवती प्रसाद द्विवेदी	25
9.	फूटल किरिन हजार	डॉ. अशोक द्विवेदी	भगवती प्रसाद द्विवेदी	26
10.	रुनुक-झुनुक	जगदीश पंथी	पाण्डेय कपिल	28
11.	मूस खात बा देस के	शम्भुनाथ उपाध्याय	डॉ जनार्दन राय	28
12.	टूटे मति मनवाँ के डोर	विजय मिश्र	भगवती प्रसाद द्विवेदी	29
13.	दइब लगइहें पार	अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'	पाण्डेय कपिल	29
14.	आवे याद बसेरा	रिपुंजय निशान्त	भगवती प्रसाद द्विवेदी	30
15.	शीशा के चूर	रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'	भगवती प्रसाद द्विवेदी	31
16.	गुमसाइल हवा	"	भगवती प्रसाद द्विवेदी	31
17.	रोवेले फफकि मुस्कान	शिवजी पाण्डेय 'रसराज'	भगवती प्रसाद द्विवेदी	32
18.	तनिके दूर विहान बा	कन्हैया पाण्डेय	भगवती प्रसाद द्विवेदी	34
19.	महक माटी के	डॉ आसिफ रोहतासवी	भगवती प्रसाद द्विवेदी	36
20.	सिकहर से भिनसहरा	मधुकर अष्ठाना	पाण्डेय कपिल	37
21.	जौ-जौ आगर	भगवती प्रसाद द्विवेदी	बरमेश्वर सिंह	40
22.	जाड़ा के धूप	रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'	डॉ. तैयब हुसैन 'पीड़ित'	41
23.	अतीत अमृत हऽ	शारदा पाण्डेय	सूर्यदेव पाठक 'पराग'	52

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक साक्षी होला मानवीय दुर्गति के, न्यायिक निषेध के । ऊ समस्त निष्ठुरता के गवाह त बा, बाकिर ओकरा पास कवनो तइयार निदान भा समाधान नइखे । एगो राजनीतिज्ञ कह सकेला– 'तू हमरा के वोट दऽ, हम देश के स्वर्ग बना देब । एगो धार्मिक व्यक्ति कह सकेला– 'हमार राह चलऽ, जरूर स्वर्ग मिली । बाकिर, एगो लेखक ना कह सके कि हमार रचना पढ़ऽ, तू दोसरा जहाँ में पहुँच जइब भा कि हम सब कुछ ठीक कर देब । एह विषय में लेखक कुछ ना कर सके । ऊ त मानवीय यातना के विस्तीर्ण धरती के एगो मूक साक्षी बा । ऊ त खाली आपन चिंता बाँट सकेला, चेतना जगा सकेला कि देखऽ इहे कुल्हि चीज बा, जे व्यवस्था के खोखला कर रहल बा, एहनी से सावधान रहऽ ।

एम. टी. वासुदेवन नायर

श्री जगन्नाथ के लिखल किताब

पाँख सतरंगी (गीत-संग्रह), 1967	मूल्य 25/- रुपया
लर मोतिन के (गजल-संग्रह), 1977	मूल्य 14/- रुपया
गजल के शिल्प-विधान, 1997	मूल्य 51/- रुपया
भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा, 1997	मूल्य 50/- रुपया
हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छन्द, 1999	मूल्य 50/- रुपया
बाँचल-खुचल (कहानी-संग्रह), 2009	मूल्य 70/- रुपया
सात रंग (एकांकी-संग्रह), 2010	मूल्य 60/- रुपया

उपरोक्त पुस्तकन के अलावा भोजपुरी के अन्य पुस्तकन खातिर भी सम्पर्क करीं ।

भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान

ए/21, साधनापुरी, रोड नं.-6डी, गर्दनीबाग, पटना-800001

'भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान', साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-1 के ओर से स्वत्वाधिकारी जगन्नाथ द्वारा अनुकृति, साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-1 से कम्पोज्ड आ न्यू प्रिन्टलाइन प्रेस, पटना-1 में मुद्रित ।
सम्पादक : जगन्नाथ